ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 | अंक-22 | फरवरी-II, 2016 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | ‘8.00

जन्म दिन पर जन अम्बार, लगी बधाइयों की कतार

सरकार के स्वास्थ्य मंत्री, गृहमंत्री, नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति व गुजरात के राज्यपाल सहित 140 देशों की जानीमानी हस्तियाँ हुईं शामिल।

आमंत्रित विशिष्ट मेहमानों ने की खुले दिल से महिमा

सकारात्मक ऊर्जा का इसमें हो रहा था संचार

सभी वक्ताओं का एक ही संदेश था कि हमें हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए, खुश रहना चाहिए, साथ ही साथ नारी और नारी शक्ति को सम्मान देकर ही समाज का उत्थान संभव है। अनैतिकता, आतंकवाद और हिंसा को सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ ही अपने प्रेम भाव से बदल सकता है, ऐसा सभी बड़े बड़े महानुभावों का कहना था जो हमारे लिए बड़े गर्व की बात है।

100 किलो का केक काटकर मनाया जन्मोत्सव

समारोह में 140 देशों के प्रतिनिधियों ने शामिल हो 100 किलो का केट काटकर दादी जी के जन्मोत्सव की बधाई दी। साथ ही साथ दादी जानकी को सूर्य रत्न लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड सहित कई संस्थाओं की ओर से शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम में महाराष्ट्र के खाद्य मंत्री गिरीश बापट, हेल्थ मिनिस्टर जगत प्रसाद नड्डा, गुजरात के गवर्नर महामहिम ओ.पी.कोहली सहित कई गणमान्य जन उपस्थित थे।

‘शतायु की बधाई हो’ की गूंज से गूंजा सभागार

किसने कैसे दी बधाई...

सरकार संस्थान के साथ मिलकर चलाएगी कायाकल्प योजना– नड्डा

हम सभी यहाँ उपस्थित हुए, यह हमारा भाग्य है, ईश्वर दादी जानकी को दीर्घायु करे, ऐसी प्रेरणा देते हुए भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा ने कहा कि इनका स्वास्थ्य इनके संकल्प की देन है। इनका जीवन सात्विक है, इनके आध्यात्मिक जीवन से हमें प्रेरणा लेकर हमें आगे बढ़ना चाहिए। आज भौतिकवाद प्रबल है, उसमें इतना बड़ा आध्यात्मिक आंदोलन जिसने इतनी प्रगति की उसके लिए अध्यात्म को सराहा जाना चाहिए। जिस प्रकार जी.डी.पी. में सूचकांक को अहमियत दी जाती है वैसे ही हेल्थ-वेल्थ ग्रोथ का जो मापदंड है वो आंतरिक खुशी होनी चाहिए। वैसे तो हम संक्रमित बीमारियों का इलाज कर रहे हैं लेकिन जो बीमारियाँ नॉन कम्युनिकेबल हैं, उनका इलाज कौन करेगा, जिससे हमें हाईपर टेंशन, डायबिटीज़, कैंसर आदि हो रहा है, उसका इलाज तो सिर्फ राजयोग ही कर सकता है। राजयोग ने जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यसनमुक्ति अभियान की शुरुआत की है उसको मैं जनमानस के साथ जोड़ने का प्रयास करुंगा। हम चाहेंगे कि भारत सरकार के साथ मिलकर ये संस्था समाज को व्यसनमुक्त बनाने में सहयोग दे। भारत सरकार ने एक **कायाकल्प योजना** शुरु की है जिसमें हम चाहते हैं कि राजयोग मेडिटेशन से आंतरिक बीमारियों को खत्म करने हेतु ब्रह्माकुमारी संस्था का सहयोग हमारे लिए खुशी की बात होगी।

भीतरी परिवर्तन का सबसे बड़ा आंदोलन यहीं से शुरु – कोहली

गुजरात के राज्यपाल ओमप्रकाश कोहली ने कहा कि हिंसा, मूल्यों के हनन व हर प्रकार के प्रदूषण के जिस वायुमंडल से हम गुज़र रहे हैं उसमें दादी जानकी का संदेश आशा की किरण पैदा करता है। उन्होंने कहा कि दादी जानकी विश्व की महान आध्यात्मिक हस्तियों में सम्माननीय स्थान रखती हैं। इस विश्व पर अनैतिकता, आतंकवाद, हिंसा के बादल मंडरा रहे हैं। हर तरफ द्वेष, घृणा और गलत प्रतिस्पर्धा का फैलाव हो रहा है। दिशाहीनता का संकट, मूल्यों के विघटन से ही पैदा हुआ है। अंतरमन में अवसाद पैदा होने से ही यह स्थिति विकसित हुई है। आसुरी तत्वों की उत्पत्ति से आसुरी आचरण बनता है। धर्म को प्राय: शाब्दिक बहस का विषय माना जाता है जबकि यह आचरण को जीवन में उतारने का विषय है। यू.एन.ओ से मान्यता प्राप्त यह संगठन समाज को बाहर से ही नहीं बल्कि भीतर से भी परिवर्तित करने का सबसे बड़ा आंदोलन बनकर उभरा है। हमें पग-पग पर सहयोग करके इस आंदोलन को सफल बनाना होगा। साथ ही उन्होंने दादी के 100वें जन्मोत्सव की बधाई दी और सुस्वास्थ्य की कामना की।

तन के साथ मन की स्वच्छता यहीं पर : राज्यपाल मृदुला सिन्हा

गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा ने कहा कि दादी जानकी की जन्मशताब्दी पर उमड़ा मानव सागर समाज कल्याण का सूत्र निकालने वाली इस महान हस्ती के प्रति स्नेह एवं सम्मान को प्रतिबिम्बित करता है। ममता से ओतप्रोत उस समाज के पुनर्निर्माण का संदेश यहाँ से लेकर जाना चाहिए जो आधुनिकता की विकृतियों के कारण टूटता जा रहा है। यहाँ से तन के साथ-साथ मन और बुद्धि की स्वच्छता का संदेश हम यदि अपने जीवन में धारण करेंगे तो समाज से तनाव मिटेगा और विकास का उत्सव मनाया जा सकेगा। इस अवसर पर वंदे मातरम पर नृत्य प्रस्तुत करने वाले रशिया के कलाकारों को संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने सम्मानित किया। संगठन सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने सभी मुख्य अतिथियों का पगड़ी व माला पहनाकर अभिनंदन किया। यूरोप प्रभारी ब्र.कु. जयंती ने दादी जानकी के साथ का अनुभव बताते हुए कहा कि दादी के जीवन में हमने देखा कि दादी ने समय श्वास और संकल्प को कभी व्यर्थ नहीं गंवाया। समारोह के दौरान सभी ने दादी को मोमेन्टो व गुलदस्ता भेंटकर बधाई दी व उनके दीर्घायु होने की कामना की।

प्रज्ञा से प्रखर दादी ने पूरा किया जीवन का सौवां सफ़र

कहा जाता है ज़िन्दगी का सफ़र अगर यूं ही कट जाये तो लोग उसे अप्रतिम नहीं मानते, कहते, कुछ तो विशेष करते ज़िन्दगी में जिसे सभी अपनी यादों में समा लेते। बस कुछ ऐसा विवरण, एक ऐसा वृत्तांत जो मर्मस्पर्शी है, दिल को अह्लादित करने वाला है और कुछ ऐसा सिखा जाने वाला है जो जीवन को सुखदायी बना जायेगा।

मानव का सम्पूर्ण चरित्र उसके कर्मों और उसके संस्कारों से गढ़ा जाता है। कर्मों का बीज संस्कार है और संस्कारों का बीज संकल्प है। बस उन्हीं संकल्पों को जिसने शिरोधार्य किया उसी महान हस्ती का नाम राजयोगिनी दादी जानकी है। आपने अपने संकल्पों के माध्यम से अपने जीवन को सबके लिए आदर्श बनाया। आपने वो कर दिखाया जो एक साधारण मानव को सोचना भी दूभर लगे, एक आईना हैं आप इस संसार के लिए। आज हर दिल की चहेती बनी दादी जानकी जी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के सफलतम सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं। भक्ति भाव से भरी, दादी जानकी जी इस ज्ञान में आने से पहले वो सब कुछ करती थीं जो एक नौधा भक्ति करने वाला करता है। एक चाह थी, एक खोज थी, एक तलाश थी उसे पाने की जिसे गुफ़ाओं, कन्दराओं में हज़ारों वर्ष तपस्या करने के बाद भी कोई मनीषी वहां तक पहुंच नहीं पाया। दादी जानकी ने अपने जीवन को उस पथ पर पूर्णतया समर्पित कर दिया और उसे ढूंढ़ के ही दम लिया। आज वो दिलाराम परमात्मा शिव निराकार दादी के साथ खेलते हैं, उन्हें पुचकारते हैं, प्यार करते हैं, बहलाते हैं। आज अपने मोहपाश में दादी ने परमात्मा को बांध रखा है। आप सोच सकते हैं कि कितनी शक्तिशाली होंगी हमारी दादी।

- ब्र. कु. गंगाधर

दादी से मिलने व बात करने से पता चलता है कि दादी जी के मन में बचपन से ही दूसरों के जीवन को सुखी बनाने की प्रेरणा आती रहती थी। आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक चरण में आप शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं, फिर भी आपने इस पथ पर अपनी भूमिका को परमात्मा की प्रेरणा के आधार से बखूबी निभाया। यज्ञ इतिहास में यह बात आती है कि दादी जी को सेवा भी ऐसी मिली थी जिसे सभी लोग नहीं कर सकते थे। वो हमेशा यज्ञ में आये हुए यज्ञ वत्सों की व्याधियों को ठीक करने तथा उन्हें सेवा देने का काम करती थीं। बीमारी आदि से ग्रस्त भाई-बहनों की नर्स के रूप में आपने खूब सेवा की और वह उस समय की थी जब आप खुद शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थीं।

दादी जी एक प्रखर प्रज्ञा

क्या भाषा बाधा हो सकती है हमारे प्रगति में? शायद नहीं, वो इसलिए क्योंकि दुनिया में लोग भाव को महत्व ज़्यादा देते हैं, भाषा को नहीं। प्रखर प्रज्ञा के रूप में जानी जाने वाली हमारी दादी इसका एक मिसाल हैं जिन्होंने विदेशी भाषा को न जानने के बावजूद भी अपनी योग शक्ति व परमात्म बल से विदेशी जनों को भी अपना बनाया और ऐसा बनाया कि आज विदेश के सभी प्रबुद्ध जन दादी जी के एक-एक महावाक्य को अपने लिए प्रगति की सीढ़ी मानते हैं। लौकिक शिक्षा दादी जी की बहुत कम रही है परन्तु अपनी चौदह वर्षों की तपस्या के बल से उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा को अपने अंग-अंग में उतारा।

विभिन्न भाषाओं के बीच बोया आध्यात्मिकता का बीज

राजयोगिनी दादी जानकी की मेधा शक्ति की प्रबलता का आंकलन, हम उनके सभी के मनोभावों को पढ़ने के तरीके से लगा सकते हैं। आध्यात्मिकता के बल से आपने विदेशी संस्कृति के लोगों पर अलग छाप छोड़ी। दादी जी संस्थान की ओर से 1970 में पहली बार विदेश सेवा हेतु लन्दन गईं और वहां पर सबके मनोभावों को पढ़ लोगों के अन्दर मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। विदेशी संस्कृति के लोग भी इन मानवीय मूल्यों को अपनाने में खुशी महसूस करते थे। इसका उदाहरण व परिणाम यह है कि लगभग 140 देशों में आध्यात्मिक मानवीय मूल्यों का संचार हो चुका है। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना - शेष पेज 8 पर

सब के साथ रहते जो 'अंतर्मुखी' वो ही सदा सुखी

बाबा बहुत अच्छा है, क्यों? हमारा बाप टीचर बन गया, कल बोला विचार सागर मंथन करो, आज बोला बुद्धि को सतोप्रधान बनाओ। कभी कुछ, कभी कुछ बाबा ऐसा बताता है ताकि हम बिज़ी रहें, अच्छे-से-अच्छे ज्ञान को धारण करें। अनहोनी बात, इम्पॉसिबल बात को बाबा पॉसिबल कर देता है इसलिए बहुत अच्छा बाबा है।

सिम्पल बात को बड़ी बात नहीं बनाओ। बड़ी को छोटी बना दो तो दोष नहीं है और औरों का दोष निकालके छोटी को बड़ा बनाया तो मेरा दोष हो जायेगा। ऐसा यह क्यों करता? सम्भलके बोल, यह सोचो भी नहीं, मुख से नहीं बोलो। यह वर्ड्स मुख से निकलता है, विज़डम कैसी है, कितनी है, अंदर से दिखाई पड़ता है। अंदर के चेहरे से दिखाई देता है। इसलिए बुद्धि को सतोगुणी से सतोप्रधान बना दो। थोड़ा भी सोचने, बोलने में एक्यूरेट नहीं है तो बाबा देखेगा मैं कुछ और चाहता हूँ यह करता कुछ और है।

मुख से शब्द ऐसे निकलें जो 20 साल पहले वाले शब्द भी याद आवें तो खुशी की आवाज़ निकले क्योंकि संगमयुग के समय का बहुत महत्व है। जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अंदर संकल्प की जो शुद्धि है ना, वह औषधि है। यह औषधि जो जितना यूज़ करता है उसके लिए उतना अच्छा होगा। अंत मते तक बाप, टीचर, सतगुरु तीनों को खुश करना है तो धर्मराज को भी खुश करो। मेरे से तीनों खुश हैं, यही विज़डम है। तीनों को खुश करना माना धर्मराज को खुश करना। है रूप तीन ही लेकिन उसके अंदर में धर्मराज छिपके ऐसा बैठा है, अभी-अभी सुबह शाम हरेक देखे, मेरी खुशी गुम क्यों हुई? धर्मराज ने सजा दी। अभी देता है थोड़ा कान पकड़के सावधान करने के लिए, जो बाबा ने कहा था मुरली सुनते समय अगर बुद्धि इधर-उधर गयी तो योग नहीं है। देखा जाता है सुनता यहाँ है, पर बुद्धि बाहर है तो बात अंदर नहीं गयी इसलिए बाहर में सबके साथ रहते हुए भी अंतर्मुखी है तो वो सदा सुखी है। मेरे संग सेवा करने वाले भी सुखी हों।

तो विज़डम बाबा की है, सुनने वाले आप हैं, अगर आप न सुनते तो मैं कोई काम की नहीं होती। अपनी बुद्धि को अभिमान से फ्री रखो। अपमान की फीलिंग न आवे, यह मंज़िल ऊँची है, जाना ज़रूर है। तो ऊँचे कैसे जायेंगे! सारा दिन ऐसे करूँ, नहीं। ऐसे करने से... एक घण्टा सुनने के साथ-साथ सुख-शांति-प्रेम जितना खींचना हो खींचे, फिर रात को घर में नींद न आये भले, क्या सुना-क्या सुना...तो अनुभव ज़्यादा होगा। शब्द किसको न भी याद आये, इसलिए भगवान के महावाक्य हैं, डिवाइन विज़डम, डिवाइन इनसाइट, दिव्य बुद्धि दिव्य दृष्टि, यह सुनने के बाद रिपीट करने से और गहरा होता जाता है।

हर कार्य में निश्चय से विजय हुई है, यह हम देखते आ रहे हैं इसलिए बाबा हर बात की गहराई में ले जाता है। दुनिया में कितनी गंदगी, कितना फैशन, क्या खाना पीना... नशे में धूत रहते हैं। हमारे यहाँ इतने पढ़ने आते फ्री ऑफ चार्ज। सवेरे-सवेरे उठके स्नान पानी करके अमृतवेले क्लास में हाज़िर हो जाते हैं। वैसे माया बड़ा धक्का खिलाती है, तरस पड़ता है। अभी हम सब मिल करके उस पार जा रहे हैं। मेरे यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स यहाँ बूढ़े जवान इकट्ठे पढ़ते हैं, इसका उदाहरण सभा में देख सकते हैं। ऐसी यूनिवर्सिटी तो सारे कल्प में नहीं देखी। योग लगाते जाओ, सहयोगी बनते जाओ और सहयोगी बनाते जाओ और योगी बना दो तो यही तो सेवा है। सिर्फ बाबा को जानो, अपने को पहचानो।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कई हैं जो अभी भी अपने को नहीं पहचानते हैं और एक दो को भी जानें इसमें धीरज चाहिए। रूहानियत चाहिए, मैं एक दो को पहचानूँ, बाबा को पहचानना तो ईज़ी था क्योंकि डायरेक्ट योग लगाया, थोड़ा सुख शान्ति मिला पर इसमें मुझे क्या मिलेगा? ज़रूरी क्या है? व्यवहार और सम्बन्ध में जब आते हैं तब एक-दो को पहचानने से नम्बर मिलता है। वो विज़डम कहाँ तक किसमें है, मिल करके रहने की या मिलाने की। जो मिल करके रहता है वो मिलाने के बिगर चल नहीं सकता है, उसको अनुभव है। उसको कभी दूरबाज खुशबाज का ख्याल नहीं आयेगा। इस ख्याल से जो फ्री हुआ, बाबा उनसे अनेक काम करा लेता है। यह बाबा ने आज दिन तक कराया है। तो मैं कहती हूँ जितना बाबा को अपना बनाओ, तो बाबा भी मुझे अपना बनाके हर कार्य कराता है। फिर हर कार्य करते, सम्बन्ध में रहते भी मुस्करा सकते हैं। फिर बाबा बहुत खुश हो जाता है क्योंकि बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए।

विशेषताएं तो प्रभु की देन हैं, प्रभु प्रसाद हैं, उसे मेरा न कहें

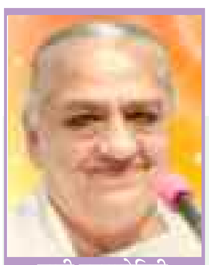

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

समस्याएं या संस्कार - यह दो प्रकार की बातें हर आत्मा के सम्मुख आती हैं। लेकिन बातें व समस्याएं या परिस्थितियां हमारी स्वस्थिति के आगे कुछ नहीं हैं। कहा ही जाता है, पर-स्थिति यानि दूसरे की तरफ से आई हुई स्थिति, स्व नहीं है। तो स्व माना मैं आत्मा, तो उसकी ताकत ज़्यादा है या पर स्थिति की ताकत ज़्यादा है? लेकिन ज़रा भी अटेंशन कम होगा तो अलबेलापन व आलस्य आना शुरु होगा तो उसका प्रभाव पड़ जायेगा। हम जितना आगे बढ़ते हैं, ज्ञान-योग में उन्नति करते हैं, उतना माया भी ट्रायल करती है क्योंकि माया समझती है कि यह 63 जन्म हमारे ही तो थे। तो जितना-जितना महारथी बनते हैं, उतना अभिमान जल्दी आता है, देह अभिमान वाला अभिमान नहीं, लेकिन अपनी सेवा की विशेषता का, अपनी प्रोग्रेस का अभिमान सूक्ष्म में आ जाता है। जब यह अभिमान आता है तो उनके सोचने का ढंग ही चेंज हो जाता है। उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आ जाता है। तो कोई भी अभिमान हो, वह आया तो उसकी निशानी है, आपको अपमान बहुत जल्दी फील होगा। थोड़ा भी कोई कुछ ऊपर-नीचे करेंगे तो आपको अपमान लगेगा। इसीलिए इसकी सम्भाल बहुत रखना है। आगे बढ़ना बहुत अच्छा है और बढ़ना ही चाहिए। लेकिन भिन्न-भिन्न अभिमान से सम्भाल रखते आगे बढ़ते रहें तो अच्छा है।

तो जो अपनी विशेषता प्रैक्टिकल में होती है उसी का अभिमान आ सकता है इसलिए इसके प्रति बड़ा सावधान हो रहना चाहिए। वह विशेषता बाबा के ज्ञान में आने से ही आई होगी, पहले तो थी नहीं, तो यह प्रभु की देन है। प्रभु प्रसाद है। प्रसाद को मेरा कहना भी रांग होता है। तो हमारे में जो भी विशेषताएं हैं, यह प्रभु प्रसाद हैं, यह प्रभु की देन हैं। अभी इसमें भी हम अभिमान करते हैं, माना मेरा पन आया ना! मैं और मेरेपन से ही तो अभिमान आना शुरु होता है। तो एक देह-भान, दूसरा देह-अभिमान और तीसरा है देह का लगाव। तो यह तीन स्टेजेज़ हैं। तो अपने को चेक करो। न अपनी विशेषता का अभिमान रखो, न दूसरे की विशेषताओं पर प्रभावित हो जाओ, इसकी सम्भाल रखो।

अंत में यह जो अपने संस्कार हैं, कमज़ोरियां हैं, वही भूत के रूप में अनुभव होते हैं, बाकी भूत आदि कोई ऐसे आते नहीं हैं। समझो आपका किसी में मोह है, तो वह मोह एक भूत के रूप में आयेगा, वह डराता रहेगा, आपको निर्भय बनने नहीं देगा। तो अंतिम समय में ऐसी कोई भी कमी हमारे में रह नहीं जाये, नहीं तो वह कमी ही भूत के रूप में सामने आती है। तो अंत मते सो गति क्या हो जायेगी। अपने देह में भी मोह नहीं होना चाहिए, थोड़ा भी मोह होगा तो भी परेशान हो जायेंगे। इसलिए सूक्ष्म में भी काम अर्थात् कामना वाले संस्कारों का अंश भी न हो क्योंकि अंत समय में वह बहुत फास्ट वार करेंगे, उन्हों को चांस मिलेगा, इतना समय आपने उसका स्थान बनाया, अंत में क्यों जायेगा, लड़ेगा ना। तो अंश मात्र भी यह संस्कार हमारे में न हो, इसके लिए बहुत सूक्ष्म चेकिंग करो- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अभिमान इन सभी को देखो। क्रोध नहीं है लेकिन मूड ऑफ हो जाती है। तो सूक्ष्म रूपों को भी चेक करके इसको पूर्ण रूप से खत्म करो। गीता के अठारह अध्यायों का सार दो शब्दों में है ``नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप''। हम स्वरूप कहते हैं, वह स्मृतिर्लब्धा कहते हैं। तो अंत के समय के लिए सार रूप में हमारे में सब प्रकार की पवित्रता है? क्योंकि पवित्रता हमारा फाउण्डेशन है। पवित्रता माना कोई भी विकारों का अंश न हो।

प्रसिद्ध कलाकारों ने दी अपनी कला से दादी को जन्मोत्सव की बधाई

अभिजीत भट्टाचार्य

साधना सरगम

हरीश मोयल

अलबर्ट असादुल्लीन, रशिया

फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह

भरतनाट्यम डांसर डॉ. पद्मजा वेंकटेश

डिवाईन लाइट ग्रुप,रशिया के कलाकार

जन्मदिन पर जन अम्बार... पेज 1 का शेष

लगता है दादी की दुआओं से कि भगवान यहीं है

दादी जानकी एक महान मानवीय व्यक्तित्व हैं। उनके नेतृत्व में चल रही संस्था सबसे महान प्रेम की भाषा सिखाती है। सौ वर्ष की उम्र में भी जब दादी जानकी सलाह और दुआयें देती हैं तो महसूस होता है कि जिस भगवान को हम देख नहीं पाते वह मधुबन में बसता है। उन्होंने कहा कि इस संस्था से ग्रहण किए गए संदेश से उनके जीवन में अद्भुत परिवर्तत आया है। और ईश्वर के सत्य को समझने की क्षमता विकसित हुई है। **– पद्मश्री डॉ. जी. भक्तवत्सलम, चेयरमैन, के.जी.हॉस्पिटल, कोयम्बटूर।**

ब्रह्माकुमारीज़ ने छुड़ाये सारे व्यसन

ये मेरे लिए बहुत ही सुनहरा अवसर है कि मुझे यहाँ दादी जानकी के इस भव्य जन्म महोत्सव में भाग लेने का मौका मिला, सिर्फ मेरे लिए ही नहीं बल्कि सबके लिए यह एक सुनहरा अवसर है। मैं परमात्मा शिव को ये अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद मेरे सारे व्यसन, सारी बुरी आदतें छूट गईं, मांसाहारी भोजन पूरी तरह से छूट गया और मैंने परमात्मा के आशीर्वाद के साथ एक नई कम्पनी शुरु की। शिव बाबा की ब्लेसिंग से मैं उस कम्पनी के कार्यों में सफल रहा। दादी जानकी शिवबाबा की रीप्रेज़ेन्टेटिव हैं, उन्होंने पूरे विश्व में इतनी महान सेवा की है जो अतुलनीय है।
- जी.वी.आर.एस.अंजनेयुलू, चेयरमैन, शिवशक्ति ग्रुप, हैदराबाद।

शांति की संदेश वाहक दादी

राजयोगिनी दादी जानकी द्वारा सौ वर्ष का स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन बिताना नि:संदेह अद्भुत एवं प्रेरणादायी है। जिस शांति की दादी संदेश वाहक हैं वह हमारे जीवन में तभी आ सकती है जब हम दूसरों में दोष ढूंढ़ना बंद कर देंगे। **– स्वामी सुपर्णानंद महाराज, सेक्रेट्री, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट, कोलकाता।**

शांतिवन। राजस्थान पत्रिका के मुख्य संपादक गुलाब कोठारी का अभिवादन करते हुए ब्र.कु. निर्वैर, जेनरल सेक्रेट्री, ब्रह्माकुमारीज़।

शांतिवन। नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राम बरण यादव को नेपाली भाषा में शिवरात्रि विशेषांक 'शिव अवतरण' देते हुए ब्र.कु. दिलीप व ब्र.कु. दीपक हरके। साथ है फिल्म अभिनेत्री वर्षा उसगांवकर, ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. संजय, ब्र.कु. ओम व अन्य।

शांतिवन। ओमशान्ति मीडिया ऑफिस में मुलाकात के पश्चात् बॉडी बिल्डर मिस्टर वर्ल्ड 2013 सुहास खामकर को कैलेण्डर भेंट करते हुए ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. संगीता व अन्य।

ओम शांति के मंत्र से दादी करती सेवा

जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है, यह ज्ञान मिलने से जीवन के सारे दु:ख दूर हो जाते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का हर गांव-गांव तक में भी स्थान है जहाँ जाकर, जिसकी अनुभूति करके बहुत ही आनंद आता है और जिस प्रकार से वे लोगों में परिवर्तन ला रही हैं वो ईश्वरीय सेवा है और बहुत सुंदर सेवा है। मानव सेवा ही परमपिता शिव की सेवा है। ब्रह्माकुमारी बहनें सभी को शांति, प्रेम, हृदय को स्वच्छ और निर्मल बनाने का संदेश देती हैं। मुझे यहाँ एक संदेश मिला है कि खुश रहो और सबको खुश रखो और यही मेरे जीवन का मूल मंत्र बन गया है।
– हरिप्रसाद कनोरिया, चेयरमैन, एस.आर.ई.आई.फाउण्डेशन एंड चेयरमैन, बिज़नेस इकोनॉमिक्स, कोलकाता।

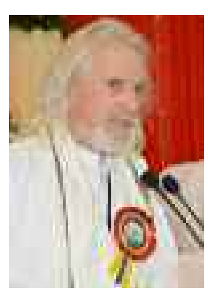

यह संस्था नहीं बल्कि एक परिवार है

ब्रह्माकुमार बनने से पहले मैं व्यसनी और नास्तिक था, लेकिन जैसे ही मुझे दादी जानकी की दृष्टि मिली, एक बहुत ही पॉवरफुल दृष्टि, इतना स्नेह कि मैं एक ही झटके से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का विद्यार्थी बन गया। ये परमात्मा का ही कार्य है जो ये ईश्वरीय विश्वविद्यालय इतनी सुंदर रीति से आगे बढ़ रहा है। दादी जानकी कहती हैं कि ये एक संस्था नहीं बल्कि ये एक परिवार है जो सिर्फ बाबा के प्यार से ही चल, बढ़ रहा है। मैं भी यह महसूस करता हूँ कि ये एक परिवार है जो बहुत प्यार से चलता है। इस परिवार के माध्यम से ही हमने परमात्मा, इस परिवार के सदस्य और साथ-साथ भारत के इतिहास, इसकी संस्कृति, इसकी महानता के बारे में जाना है और कई विदेशियों की भारत के प्रति जो गलत सोच थी वो बदली है। मैं गर्व महसूस करता हूँ कि मैं यहाँ भारत में आया हूँ, मैं यहाँ हूँ, मुझे भारत से बहुत प्यार है। **– रॉबिन रामसे, फिल्म आर्टिस्ट, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया**

लखनऊ-त्रिपाठी नगर। उत्तर प्रदेश में किसानों की पारदर्शी सेवाओं हेतु ब्र.कु. बद्री विशाल को सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री माननीय अखिलेश यादव। साथ हैं प्रदेश के अन्य मंत्रीगण।

भैरहवा-नेपाल। नेपाल के श्रम तथा रोज़गार एवं वाणिज्य मंत्री दीपक बोहरा को बधाई एवं शुभकामना देते हुए ब्र.कु. शान्ति। साथ हैं ब्र.कु. भूपेन्द्र व अन्य।

कलायत-हरियाणा। विधायक जयप्रकाश जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक,माउण्ट आबू।

भुवनेश्वर-ओडिशा। गीता पाठशाला के उद्घाटन पश्चात् पी.सी. पनीग्रही,अंडरटेकिंग डायरेक्टर,महानदी कोल फील्ड्स लिमिटेड,भारत सरकार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. इंदुमति। साथ हैं ब्र.कु. सन्यासी पनीग्रही व ब्र.कु. बिजय।

दिल्ली-लोधी रोड। सिस्ट्रा इंडिया,बहुराष्ट्रीय कम्पनी के अधिकारियों हेतु 'तनाव मुक्त जीवन' विषय पर संगोष्ठी के पश्चात् समूह चित्र में श्री हरी सोमलराजू,प्रबंध निदेशक, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. पीयूष व प्रतिभागी।

कादमा-हरियाणा। स्वामी विवेकानंद जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में छात्रों को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. वसुधा। साथ हैं देशभक्त सोसायटी के सचिव राजेन्दर जी, प्राचार्य अमित जाखड़ व अन्य।

बीमारी को शारीरिक लेवल पर नहीं मानसिक लेवल पर ही ठीक करो

प्रश्न:- किसी भी घटना से उत्पन्न दर्द को कई लोग अपने मन में ही दबा देते हैं, लेकिन अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं और वो बुरी तरह से टूट जाते हैं।

उत्तर:- हम जिस दु:ख की बात कर रहे हैं कि वो अंदर क्रियेट ही न हो। हम छोटी-छोटी बातों में पहले कोशिश करें कि हमें स्थिरता से परिस्थिति को पास करना है। फिर बड़ी परिस्थिति में ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बड़ी परिस्थिति को सहज रूप से पार कर लेंगे। लेकिन इसकी शुरुआत हमें छोटी-छोटी परिस्थितियों से करनी पड़ेगी। कई बार हम समझते कि जो दबाव है वो एक बीमारी की तरह है। क्या एक डॉक्टर ही इसका इलाज कर सकता है? हाँ, ये बीमारी जैसा तो है लेकिन शारीरिक नहीं है, इसके लिए मुझे डॉक्टर के पास जाकर अपनी पल्स या अपनी हार्ट बीट ये सब चेकअप नहीं करवाना है, क्योंकि इस बीमारी को सिर्फ और सिर्फ मैं ही जानता हूँ। मरीज भी मैं हूँ तो डॉक्टर भी मैं ही हूँ। जैसे ही हमें थोड़ा सा भी असहज लगता तो हम जाकर पल्स रेट चेक करवाते हैं।

इसी तरह अगर रोज़ सुबह उठकर अपने थॉट की पल्स को चेक करो कि हमारे मन में कैसे विचार चल रहे हैं, उसकी बीट कैसी है, सहज है। ऐसे तो नहीं कि बहुत तेज चल रही है। जब हृदय की गति बढ़ जाती है तब हम तुरंत कहते हैं कि कुछ बीमारी है। हम ये महसूस ही नहीं करते कि हृदय की गति तेज क्यों हुई? क्योंकि इससे पहले मन में बहुत कुछ बीते हुए समय का चल रहा होता है। और निश्चित है कि बहुत कुछ नेगेटिव क्वालिटी का थॉट चल रहा है, जिसकी वजह से हृदय की गति तेज़ हुई है।

जब वो दबाव हमारे शरीर को प्रभावित कर देता है तब हमें लगता कि अब इसका इलाज करवाना ज़रूरी है। अगर उसको उसी लेवल पर ठीक कर दिया होता तो वो शारीरिक लेवल पर आता ही नहीं। दबाव तो हमारी परफॉरमेंस को प्रभाविता करता ही है लेकिन सबसे पहले वह मेरी एकाग्रता शक्ति को प्रभावित करता है, स्मरण शक्ति को प्रभावित करता है, मेरी निर्णय शक्ति को प्रभावित करता है। तब भी अगर आप दबाव के अंदर हैं तो हम क्या निर्णय लेंगे, हो सकता है कि हम जो निर्णय लें वो सही न हो, क्योंकि तनाव के कारण मन में बहुत उलझन पैदा हो जाती है। अगर किसी के अंदर चिंता करने की आदत है तो उनके लिए फिर अपचन, अल्सर, ये सब बहुत साधारण सी बात हो जाती है। गुस्सा है तो कैंसर, जैसे हमने गुस्से को पकड़ कर रखा है किसी के प्रति, तो वो क्रियेट हो जाता है। बहुत दर्द वाले थॉट्स हमारे हृदय को प्रभावित करते हैं जिसके कारण हृदय में ब्लॉकेज हो जाती है, क्योंकि मन में कोई न कोई ब्लॉकेज करके रखा है। हमें अपने माइंड के लेवल पर चेक करना है और अपने ब्लॉकेज को दूर करते जायें ताकि वह शारीरिक लेवल पर क्रियेट ही न हो।

ब्र.कु. शिवानी

प्रश्न:- यदि आप स्ट्रेस में हैं तो थोड़ी देर के लिए सोचें कि वास्तव में मैं दबाव से बाहर हूँ। उसके बाद आप फ्रेश होकर एक बार फिर से ज़िंदगी को जिस भी परिस्थिति में थे, वो शुरू कर सकते हैं।

उत्तर:- अस्थायी रूप से। क्योंकि अगर आप एक विशेष वातावरण में काम कर रहे हैं, जैसे आप किसी कार्य में हैं या आपकी परीक्षायें हैं और आप बहुत ज़्यादा स्ट्रेस से गुज़रे हैं तो आपको लगता है कि परीक्षा के बाद छुट्टियां होनी चाहिए। ऑफिस में बहुत ज़्यादा तनाव है तो चलो छुट्टी लेकर कहीं चले जाते हैं, लेकिन यह इसका समाधान नहीं है। इससे हमें थोड़ी देर के लिए आराम ज़रूर मिलता है। जिसमें आप अपनी नॉर्मल रूटीन से कुछ अलग कर रहे हैं। वो वैसे भी अच्छा लगता है कि आप रोज़ जो कुछ भी करते आये हैं उससे आप कुछ अलग कर लेते हैं। जैसे ही आप कुछ अलग करने जाते हैं तो आपकी थॉट्स थोड़ी सी उस तरफ से हट कर दूसरी तरफ चली जाती। लेकिन कई बार तो लोग अपने तनाव को अपने हॉलीडे पर भी साथ लेकर जाते हैं। ठीक है, मैंने स्ट्रेस को समाप्त नहीं किया, मैंने उसको थोड़ी देर के लिए स्थगित कर दिया। मैं पंद्रह दिन के लिए कहीं और जाकर आता हूँ, इससे हम दूसरी तरफ सोचने लगते हैं। हाँ, ये हमारे शरीर को आराम तो देता है, लेकिन मन को आराम नहीं देता है। - क्रमश:

लाभप्रद है फलों का सेवन...

स्वास्थ्य

वैज्ञानिक अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि शाकाहारी भोजन के साथ फलों का आहार शरीर को चिरयौवन प्रदान करता है। मांसाहारी और तेज मिर्च मसालेयुक्त पदार्थ शरीर को रोगी बनाते हैं और त्वचा की लावण्यता को कम करते हैं। हरे पत्तों का सूप या फल आदि शरीर को निरोग बनाने में काफी सहायक होते हैं।

आम: यह फलों का बादशाह माना जाता है। इसकी अनेक जातियाँ होती हैं जिनमें हाफुश, लंगड़ा, सफेदा, दशहरी, चौसा, दरबारी और राजभोग प्रमुख हैं। यह गले के रोगों के लिए बहुत लाभदायक पाया गया है। अतिसार, मूत्र रोग में लाभ प्रदान करता है। गर्मी में लू लगने पर कच्चे आप का पन्ना बहुत लाभप्रद होता है। दूध के साथ आमरस शक्ति प्रदान करता है।

अमरूद: यह फल भारत में सभी प्रांतों में पाया जाता है, लेकिन इलाहाबाद के अमरूद का विशेष स्थान है। यह सात्विक मधुर फल है। हल्का खट्टा पकने पर स्वादिष्ट-शीतल, कफकारक, रक्तवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, दाह, मूर्च्छा में सहायक, कब्ज के रोगों में बहुत उपयोगी है। कुछ देशों में इसके पत्तों को पानी में उबालकर लोग स्नान करते हैं और मधुमेह के रोगियों को पिलाते हैं। इसके पत्तों का काढ़ा हैजा, दंत पीड़ा और जले स्थान आदि पर लगाने से लाभ होता है।

केला: यह वृक्ष भारत ही नहीं, विदेशों में भी प्रसिद्ध है। इसकी अनेक जातियाँ होती हैं। हरी छाल, लाल छाल, पीली छाल, कोकनी और चीनी छाल। यह पौष्टिक और कृमिनाशक होता है। रक्त विकार, मधुमेह, अग्निमथ, कुष्ठ, कान की पीड़ा, गुर्दे की निर्बलता में सहयोगी, सर्प दंश के रोगी को इसके पेड़ से निकले जल का एक प्याला देने से लाभ होता है और कच्चा खाने से पेशाब की अधिकता में कमी आती है।

अनार: देश-विदेश में सभी वर्ग के लोग इसके रस का आनंद लेते हैं। अनार त्रिदोष नाशक, ज्वर दूर करने वाला, हृदय रोग में लाभप्रद, मुखरोग दूर करने वाला और बलवर्द्धक होता है। इसके फूल के रस को नाक से खून बहने की अवस्था में डालने पर लाभ होता है। छिलके का काढ़ा कृमिनाशक और खांसी में लाभप्रद होता है।

सेव: इसका वृक्ष मध्यम श्रेणी की ऊँचाई लिए हुए होता है। भारत में कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह वात-पित्तनाशक, पौष्टिक, शीतल होता है। इसमें विटामिन बी काफी मात्रा में होता है। नेत्रों के अनेक रोगों में इसका सेवन लाभप्रद होता है। कब्ज के रोगी को रात को सेब खाकर दूध पीना चाहिए। इससे प्रात: पेट अच्छी तरह साफ होता है। सेब गुर्दे की पीड़ा में लाभप्रद होता है और इसके रस के सेवन से नींद अच्छी आती है।

जामुन: भारत के सभी प्रांतों में इसके पेड़ पाए जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के अंत में इसके सेवन से रक्त विकार - शेष पेज 11 पर

बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्प्यूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दुःख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दुःखी होते हैं। जैसे कम्पयूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

पाँचवा संस्कार : आत्मा के मूल संस्कार - अन्तिम संस्कार आत्मा के मूल संस्कार के रूप में हैं। आत्मा मूल रूप से सातो गुणों से भरपूर है। ये संस्कार अनादि हैं, आत्मा के साथ-साथ आ जाते हैं। आज चार संस्कारों के कारण ही हमारा मूल संस्कार दब सा गया है। हम चाहते तो हैं कि हम खुश रहें, प्रेम स्वरूप रहें, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा। कारण उसका स्वाभाविक है कि उपरोक्त चारो संस्कार बीच-बीच में जागृत हो जाते हैं जिसके कारण हम कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते।

ऐसा नहीं है आप हमेशा से बुरे हैं या ये आपकी नियति है। बल्कि इसे बदलने की गुंजाईश है क्योंकि इसको आपने ही विकसित किया है। आपने ही चारों संस्कार जैसे पूर्वजन्मों के संस्कार, माता-पिता से मिले हुए संस्कार आदि-आदि बनाये हैं। तो इन्हें बदला भी तो जा सकता है।

सभी भगवान को कोसते हैं कि आपने मेरा भाग्य कैसा लिख दिया!

जब परमात्मा ने आपको नीचे भेजा तो आपको दो चीजें उन्होंने गिफ्ट में दी। पहला विवेक (विज़डम), दूसरा स्वतन्त्रता (फ्रीडम)। कहने का तात्पर्य यह है कि परमात्मा ने कहा होगा कि मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं सभी के कर्मों को जज करूँ कि क्या सही किया, क्या गलत किया। इसलिए मैं तुमकों ये दोनों चीजें दे रहा हूँ, कि तुम खुद कर्म करने के लिए स्वतन्त्र हो।

अगर गलत है , या सही होता है तो विवेकपूर्वक निर्णय भी कर सको। अर्थात् कर्म करने की स्वतन्त्रता दी और निर्णय करने के लिए बुद्धि भी दी। लेकिन आज का हाल आपसे छुपा नहीं है। सभी कर्म तो करना चाहते हैं और उसमें स्वतन्त्रता भी चाहते हैं लेकिन कर्म कैसा हो रहा है आप खुद बताओ! आज हमने अपनी स्वतन्त्रता के कारण ही इतनी सारी गलतियाँ की जिसके कारण विवेक शक्ति शून्य हो गई है। बस अब हमें क्या करना है कि अपनी बुद्धि का सॉफ्टवेयर पुनः डाउनलोड करना है। अब यदि आज के संसार से बुद्धि डाउनलोड करें तो उसमें वायरस अवश्य होगा। वायरस का अर्थ यहाँ यह है कि सबकी अपनी-अपनी बुद्धि है। कोई कहेगा यह सही, कोई कहेगा यह सही है। लेकिन कोई भी सही नहीं है, क्योंकि किसी की बुद्धि ठीक काम ही नहीं कर रही है। इसलिए हमें सुप्रीम इन्टरनेट से या परमात्मा से बुद्धि का सॉफ्टवेयर डाउनलोड करना पड़ेगा।

हमने आत्मा की सारी कहानी सुनी कि आत्मा का रूप क्या है, ज्योति बिन्दु, शरीर में आत्मा दोनों भृकुटि के मध्य हाइपोथेलेमस, पीनियल और पिट्यूटरी ग्रंथि के बीच में स्थित है। इसका घर परमधाम या ब्रह्मलोक है। अब प्रश्न यह उठता है कि आत्मा को शक्ति कैसे मिले अर्थात् उसकी बुद्धि कैसे खुले ? उसके लिए उसे परमात्मा का सत्य परिचय चाहिए। लेकिन आज परमात्मा के बारे में इतनी सारी भ्रांतियां हैं कि उसके लिए हमें परमात्मा पर बहुत सारे तथ्य देने होंगे। इसलिए अगले अंक में हम परमात्मा के विषय में चर्चा करेंगे।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-17

1		2		■	3	4			■
■	■		■	■	5		■	■	■
6		■	7	■	8		9	10	■
	■	11				■	12		
	■		■	■	■	13	■		■
■	■	14		15	■	16	17	■	■
18			■	19	20	■		■	21
	■	■	22			■	■	23	
24		25	■	26			■		■
	■		■		■	■	28		

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. द्वापर युग से अनेक मठ....की स्थापना शुरु हुई (2)
3. अद्वेत मत, एक समान विचार (4)
4. ईर्ष्या, द्वेष, नफरत (3)
6. तुम अभी एक....सेवा में लगाओ तो वहाँ तुम्हें लाखों मिलेगा (3)
7. रास्ता, वाट, पथ (2)
9. सूखी घास, तिनका, तृण (2)
10. ईमान, स्वाभिमान (3)
11. हल, परिणाम, उत्तर (4)
13. ....की छाया से बचना ज़रा, 5 विकार (2)
15. जिसके पास करोड़ों की सम्पत्ति हो, अत्यधिक धनी (5)
17. जान, प्राण, ताकत, ज़ोर (2)
18. कड़वा बोल, अप्रिय बोल (4)
20. दान, मुस्लिम धर्म का एक आवश्यक कर्म (3)
21. रवि, भानू, भास्कर, दिनकर, दिनेश (2)
23. आपत्ति, आफत, मुसीबत (3)
25. नाखून, बटा हुआ रेशमी धागा, डोर (2)

बायें से दायें

1. तुम अभी बिल्कुल....(किनारे) पर खड़े हो (4)
3. अपनी स्थिति को....बनाने के लिए पास्ट का चिंतन मत करो (4)
5. आने वाले....की तुम हो (2)
6. नाम....की बीमारी भी कड़ी बीमारी है (2)
8. ठीक-ठाक, सलामत, खैरियत (4)
11. राज़ी, अनुमति, संमत (4)
12. हवा, वायु, 5 तत्वों में से एक (3)
14. धर्मशील, धर्म सम्बन्धी, धर्म के अनुसार (3)
16. निरंतर बाप की....से पाप कटेंगे (2)
18. तन, मन, धन सहित इस यज्ञ में....जाना है, बलिहार, समर्पित, (3)
19. ....अमृतवेले उठ बाबा की याद में बैठना है, प्रतिदिन (2)
22. पुत्र, वत्स, बेटा (3)
23. उत्तम, श्रेष्ठ, पूज्य, एक सभ्य जाति (2)
24. मधुबन के इस....के तुम बहार हो (3)
26. भारत के उत्थान और....की कहानी सबको सुनाओ (3)
28. ....मिसल अपना चावल मुट्ठी सफल करना है (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

काठमाण्डू-नेपाल। पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 47वीं पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शांति तथा पुननिर्माण राज्य मंत्री दिप नारायण साह।

रूपवास-राज.। राजकीय माध्यमिक विद्यालय एक्टा के विद्यार्थियों को 'जीवन मूल्यों' पर सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. कनक, ब्र.कु. गीता तथा शिक्षकगण।

तोशाम-हरियाणा। शांति यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए आयकर आयुक्त राजेश नाफरिया, सरपंच देवराज गोयल, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. निर्मला व अन्य।

कडप्पा। नये वर्ष के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए ब्र.कु. गीता व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

नालागढ़-हि.प्र.। एस.एस. स्कूल में एन.एस.एस. कैम्प के छात्रों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र.कु. राधा को सम्मानित करते हुए स्कूल के प्रिन्सीपल बृजेश जी व अन्य।

नवांशहर-पंजाब। सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के सीनियर मैनेजर रेशम सिंह तथा अन्य अधिकारीगण ब्र.कु. परनीता को 'तनाव मुक्ति' कार्यक्रम के पश्चात् सम्मानित करते हुए।

सेन फ्रान्सिसको। नवनिर्वाचित मेयर एडविन ली के इनॉगरल ईव इंटरफेथ प्रेयर सर्विस के कार्यक्रम में उनसे मुलाकात कर बधाई देते हुए ब्र.कु. चंद्रू।

देवघर-झारखण्ड। 'तनावमुक्त जीवन शैली' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में एस.बी.आई. लर्निंग सेंटर के महाप्रबंधक सतीश कुमार सिंह, ब्र.कु. रीता, शिल्पी बहन, मेघा बहन, ब्र.कु. सत्यनारायण, सुनील भाई व बैंक के कर्मचारी गण।

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माबाबा की 47वीं पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रमा।

गया-नूर कम्पाउण्ड। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा के स्मृति चिन्ह पर पुष्पचक्र अर्पित करते हुए बी.आर.एम. कॉलेज के प्रिन्सीपल डॉ. बृजेन्द्र कुमार, रामानुज मठ के मठाधीश रामकुमार मिश्रा, गया कॉलेज के संस्कृत विख्याता ब्रजभूषण प्रसाद सिंह एवं ब्र.कु. शीला।

देहरादून। ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं किशोर उपाध्याय, प्रेसीडेंट,उत्तराखण्ड कांग्रेस, सुरेन्द्र कुमार,मीडिया इन चार्ज टू सी.एम., ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. नीलम व अन्य।

हरिद्वार। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माबाबा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए थाना भवन आश्रम भूपतवाला हरिद्वार के अध्यक्ष महन्त सतपाल ब्रह्मचारी जी।

आने वाली शिवरात्रि की तैयारी

यहाँ पर कोई पुरुष या स्त्री की बात नहीं है कि स्त्री को वर की आवश्यकता है पुरुष को नहीं है, यहाँ हर किसी को सहारे या साथी की ज़रूरत है। यहाँ बात आत्मा की है, यहाँ हर आत्मा आज खाली है, उसके अंदर बिल्कुल ताकत नहीं है, न खुद को सम्भालने की, न दूसरों को सम्भालने की, वो सम्भाल तभी पायेगा जब उसे कोई सच्चा सहारा मिलेगा। सच्चा साथी व सच्चा सहारा एक सत्य परमपिता ही हो सकता है, और कोई नहीं। उस सहारे की आश हमें वो सबकुछ प्रदान कर देगी जिसकी हमको कई जन्मों से तलाश है। इसलिए इस शिवरात्रि पर हम सभी व्रत लें कि हम अपने आपको पहले वरने योग्य बनायेंगे और उसके लिए शिव से प्रीत जुटायेंगे।

शिवरात्रि पर्व के आने की जैसे ही कुछ भनक लगती, सभी लोग अपनी-अपनी तैयारियों में जुट जाते हैं। फल महंगे होने लग जाते हैं, बेलपत्र जिसको पूरे साल कोई ऐसे नहीं पूछता, लेकिन शिवरात्रि के लिए तो उसकी कीमत ऐसे बढ़ती है कि वो आसमान छूने लग जाते हैं। जितना जो प्यार से इसके लिए तैयारी करता, उसको शायद वरदान वैसा ही प्राप्त होता, ऐसा सभी का मानना है। हैरानी की बात तो यह है कि कौमार्य बालिकाएँ अपने सुंदर वर की कामना हेतु शिव पूजन करती हैं, करना भी चाहिए, लेकिन क्या ऐसा कहीं लिखा है कि शिव पूजने से हमको अच्छे वर की प्राप्ति हो सकती है या सिर्फ मान्यता है।

परमात्मा जैसा साथी

आप सबको सोचकर थोड़ा सा आश्चर्य ज़रूर होगा, किंतु सत्य यही है कि परमात्मा के पूजन से हमें परमात्मा जैसे साथी की कामना होती है। सापेक्ष भाव यह है, जैसे उन्हें कहते हैं परमेश्वर और इन्हें कहते हैं पति-परमेश्वर। अर्थात् जो वर मिलेगा उसका सारा व्यवहार, आचार, आचरण सबकुछ परमेश्वर जैसा होना चाहिए। क्या हम सही सोच रहे हैं, अगर नहीं सोच रहे तो कहीं न कहीं कुछ इसमें गलत हो रहा है। इसका आप सबको भी तो अनुभव होगा ही ना। क्योंकि आज के पुरुष की जो मनोस्थिति है, उस मनोस्थिति को आँका नहीं जा सकता। आज भी स्त्री को वो चरणों की धूल मानते और कहते कि आपका बाहर से या बाहरी दुनिया से क्या वास्ता है, आप सिर्फ चार-दीवारी के अंदर रह सबकी सेवा करो, यही आपका धर्म है। अब आप बतायें, जो धर्म की बात कर रहे हैं, क्या वे धर्म के अंशमात्र को भी धारण करते हैं? कहने को पति-परमेश्वर और आचरण कैसा!

परमात्मा शिव को वरण करें

तो आज हम एक रहस्य आपको बताना चाहेंगे जिससे आपको जो वर मिलेगा वो आपका ही होगा और एक जन्म के लिए नहीं, अनेक जन्मों के लिए होगा। बस इस शिवरात्रि पर आपको करना क्या है कि, परमात्मा शिव को वरण करना है सच्चे मन से। सच्चा मन अर्थात् परमात्मा किसी स्थूल चीज़ का भूखा नहीं है क्योंकि वो अभोक्ता है, अकर्ता है, तो उसे कोई भी स्थूल चीज़, भांग, धतूरा, बेलपत्र, गन्ना आदि खाने की आवश्यकता नहीं है। यदि खाने की आवश्यकता नहीं है, तो आपको चढ़ाने की भी आवश्यकता नहीं है। दरअसल, ये सारी चीज़ें जिसमें कुछ . जहरीली चीज़ें भी हैं, अब परमात्मा चलो अच्छी चीज़ खाये, लेकिन खराब चीज़ क्यों खाये! तो इसका कोई तो आध्यात्मिक रहस्य होगा। आज तक हम सबकुछ करते आये लेकिन रहस्य को नहीं जान पाये।

होता अमरत्व का वरदान प्राप्त

हमारा मन आज सबसे ज़्यादा डरा हुआ है, उसमें भय है कि मैं मर गया तो, बीमार हो गया तो, मेरा पति चला गया तो, मेरा बच्चा चला गया तो! आदि आदि। इन डरों के कारण ही संसार में हर प्राणी मात्र देवों के देव महादेव शिव की पूजा करता है। कहते हैं कि शिव की पूजा करने से अमरत्व का वरदान प्राप्त होता है, लेकिन अमर बनने के लिए हम सिर्फ कुछ कहीं चढ़ा के अमर बन सकते हैं क्या, हाँ, कुछ खाकर ज़रूर अमर बन सकते हैं। तो यहाँ पर खाना क्या है, चढ़ाना क्या है। परमात्मा कहते, जिस प्रकार शरीर को पाँच

तरह के भोजन की आवश्यकता होती है, जैसे पृथ्वी को अन्न से, जल तत्व को जल से, अग्नि तत्व को हम अग्नि से अर्थात् अग्नि पैदा करने वाले पदार्थों से भरपूर करते हैं, ठीक वैसे ही मन को ठीक करने के लिए हमको सात प्रकार के भोजन को खाने की आवश्यकता पड़ती है जिसमें शांति, प्रेम, पवित्रता, सुख, आनंद व शक्ति और इन सबकी प्राप्ति के लिए ज्ञान की आवश्यकता है, तो इन सात तरह के भोजन को खाने से मन बहुत शक्तिशाली होता है। दरअसल, अगर दूसरे शब्दों में कहें तो हम इन सातों तरह के भोजन के साथ ही शुरु से रहे हैं, पले-बढ़े हैं। अगर यह रोज़ हमारी खुराक में शामिल हो जायें तो हमें अमरत्व प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता। यही तो हमें खाना है।

अब चढ़ाना क्या है? मन को खराब करने वाले सात तरह की विषैली चीज़ें हैं जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य और भय, इसी का यादगार शिवरात्रि पर बहुत सारे फल और फूल चढ़ाते हैं जो कहीं ना कहीं तो इन सारी चीज़ों के साथ जुड़े हुए हैं। अब चढ़ाना ये है और चढ़ा देते हैं स्थूल चीज़ें। परमात्मा कहता, चाहिए तो तुमको अच्छा वर जो परमात्मा जैसा हो, लेकिन आप कैसे हो! आपमें भी तो परमात्मा जैसा वर प्राप्त करने की योग्यता होनी चाहिए ना। सोचना आपको है, हमें नहीं। क्योंकि वर उसे अच्छा मिलेगा जिसके अंदर इन सातों गुणों का समावेश होगा, और आज के परिवेश में तो यह तो असंभव जैसा ही है। हाँ, आप आगे के लिए ऐसी तैयारी कर सकते हैं, क्योंकि इस दुनिया में हर जगह अपवित्रता का माहौल है, और वो अपनी चरम सीमा लांघ चुका है। शायद इसीलिए हमें पवित्रता के सागर परमात्मा की आवश्यकता पड़ रही है, उसको वरने की आवश्यकता पड़ रही है।

इसलिए शिवरात्रि का पर्व इसी का यादगार है कि जब धरा पर सारी आत्मायें आ जाती हैं और हर जगह अपवित्रता और अमानवीय व्यवहार का ताँता लग जाता है तो परमात्मा शिव निराकार इस धरती पर अवतरित होकर इस अज्ञानता रूपी रात का शमन करते हैं, जिसमें सभी मनुष्यात्मायें परमात्मा को अपना सब अवगुण दान कर उस परमात्मा से वरदान प्राप्त करते हैं। वरदान का अर्थ यहाँ यही है कि जैसे ही हम अवगुण छोड़ते, गुणों को धारण करते तो स्वतः ही परमात्मा से हमें वरदान मिलने लग जाते। ये एक सार्वभौमिक सत्य है।

सहारा एक सत्य परमपिता का

यहाँ पर कोई पुरुष या स्त्री की बात नहीं है कि स्त्री को वर की आवश्यकता है पुरुष को नहीं है, यहाँ हर किसी को सहारे या साथी की ज़रूरत है। यहाँ बात आत्मा की है, यहाँ हर आत्मा आज खाली है, उसके अंदर बिल्कुल ताकत नहीं है, न खुद को सम्भालने की, न दूसरों को सम्भालने की, वो सम्भाल तभी पायेगा जब उसे कोई सच्चा सहारा मिलेगा। सच्चा साथी व सच्चा सहारा एक सत्य परमपिता ही हो सकता है और कोई नहीं। उस सहारे की आश हमें वो सबकुछ प्रदान कर देगी जिसकी हमको कई जन्मों से तलाश है। इसलिए इस शिवरात्रि पर हम सभी व्रत लें कि हम अपने आपको पहले वरने योग्य बनायेंगे और उसके लिए शिव से प्रीत जुटायेंगे।

मेरी वर्षों की तलाश पूरी हुई... -अनुभव

मैंने पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर, पीस पार्क सब देखा, मैंने अपने उस संघ की भी भीड़ देखी जहां लोग एक-दूसरे से लड़ जाते हैं रास्ते के लिए, लेकिन मैंने देखा कि यहां 25000 की संख्या होते हुए भी शांति की वर्षा हो रही है। इसमें कितना सुख है, ऐसा कहना है बाबा के एक मणि डॉ. शेषमणि का। आप रीवा में आर.एस.एस. में प्रमुख पद पर हैं, उनसे बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं...

प्रश्न: आप कैसे इस ज्ञान में आये?

उत्तर: मैं पिछले 25 वर्षों से आर.एस.एस. में कार्यरत हूँ। एक दिन मुझे अचानक टहलते हुए एक पुलिया पर ज्ञानामृत की पत्रिका मिली। इस बीच मेरे मन में बहुत उथल-पुथल चलती रही, कई मार्गों पर चलते हुए, चारो धाम करते हुए, कल्पवास गंगा के किनारे प्रयाग में एक मास करते हुए भी मन को शांति नहीं मिलती थी। दृष्टि और वृत्ति पवित्र नहीं होती थी। मैं इसी की तलाश में था। बस एक छोटा सा ही आधार बना मुझे ब्रह्माकुमारीज़ तक खींचने का।

प्रश्न: आपको सम्पूर्ण विश्वास कैसे हुआ?

उत्तर: क्या भगवान से योग जुड़ सकता है, कैसे सभी समाधि योग लगाते रहे होंगे, इसकी कल्पना करता था लेकिन फिर भी कुछ समझ में नहीं आता। मैं घंटों पूजा भी करता था। ज्ञानामृत मिली तो मैंने उसमें एक बहन का लेख पढ़ा कि मैं 17 वर्षों से पूर्ण पवित्र हूँ और मेरा एक 17 वर्ष का बच्चा है और उनकी उम्र 45 वर्ष से अधिक नहीं है। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी 67 वर्ष की उम्र में भी दृष्टि और वृत्ति पवित्र नहीं हो रही है तो इसका कारण क्या है। जिस संघ में मैं 26 वर्षों से काम कर रहा हूँ, वह संघ भी मुझे अच्छा लगा, लेकिन वहां भी मुझे ये दृष्टि नहीं मिल पाई उतनी ज़्यादा। मैं उस पत्रिका को पढ़ने के बाद घर ले गया, फिर मैं सेंटर पर गया और मैंने कहा कि यहाँ जो भी होता है मुझे सीखना है। मुझे जिज्ञासा थी कि मैं भी देखूं जानूं कि कैसे होता है ये सब। मैंने वहां सात दिन का कोर्स किया। जब कोर्स किया तब मन में बहुत सारी शंकाएं थीं, पर मुझे यकीन था कि इससे जुड़ा रहूँ तो मुझे मेरी शंकाओं का निवारण अवश्य मिलेगा।

प्रश्न: मधुबन कैसे आना हुआ?

उत्तर: पढ़ाई के चलने के साथ-साथ मुझे परमात्मा से मिलने की भी इच्छा उत्पन्न हुई। पढ़ाई के बीच में ही एक बार मधुबन से दो भाई गये हुए थे, उनके क्लास के बाद मेरा योग भी लगने लगा। फिर मुझे मधुबन आने का मौका मिला। मैं जब यहाँ आया और बस से उतरते ही मैंने देखा कि बाबा मेरे सामने बाहें फैलाये खड़ा है, उसे देखते ही ऐसा लगा जैसे मैं स्वर्ग में आ गया हूँ। मैंने पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर, पीस पार्क सब देखा और यहां आने वाले भाई बहनों का इतना बड़ा संगठन देखा, मैंने अपने उस संघ की भी भीड़ देखी है, कई बार मारामारी हो जाती है, एक-दूसरे से लड़ जाते हैं रास्ते के लिए कि मुझे इसी रास्ते से जाना है, लेकिन मैंने यहाँ पाया कि 25000 की संख्या होते हुए भी, चाहे भोजन का स्थान हो, विश्राम का स्थान हो या क्लास का समय, हर वक्त इतनी शांति जो मैंने महसूस की वो कहीं और नहीं की। मैंने जाना कि यहाँ शान्ति की वर्षा हो रही है और इसी शान्ति में ही सुख है। बाबा हमें ज्ञानरत्नों से सजाते हैं, योगी बनाते हैं, और मुझे तो पूरा विश्वास है कि यदि परमात्मा को मैं इसी तरह याद करता रहा और करूंगा तो सम्भवतः जिस चीज़ की मुझे तलाश है, वह तलाश मेरी पूरी हो जाएगी। मैं परमात्मा का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने मुझे अपना बना लिया।

प्रश्न: आप आध्यात्मिक पत्रिकाओं में से किनका ज़्यादा अध्ययन करते हैं?

उत्तर: मैं प्रमुख रूप से ओमशान्ति मीडिया तथा ज्ञानामृत पत्रिकाओं का मार्ग दर्शन लेता तथा साथ ही साथ सेवाकेन्द्र पर बड़े भाइयों व बहनों से मार्गदर्शन लेता रहता हूँ और अच्छी योग की स्थिति बनाकर इस सुंदर मार्ग पर चलने का पूरा प्रयत्न कर भी रहा हूँ और करता रहूंगा।

प्रश्न: ऐसी कोई आदत जो ज्ञान में आने से पहले आप छोड़ना चाहते थे, आपको अच्छी नहीं लगती थी लेकिन छूटती नहीं थी और इस ज्ञान में आने के बाद सहज ही छूट गई हो?

उत्तर: जी हाँ, बिल्कुल। जिस चीज़ की मैं खासतौर से तलाश में था, उन दो चीज़ों की, वो दोनों मुझे मिलने लगी हैं, मैं पूर्ण तो नहीं कह सकता हूँ, लेकिन मैं कहूँ कि 70 प्रतिशत मैं पा चुका हूँ तो गलत नहीं होगा। मेरी 18 साल की एक नातिन है तो अन्य बच्चियाँ भी मुझे नातिन जैसी क्यों नज़र नहीं आतीं, उनका देह ही क्यों नज़र आता है मुझे। लेकिन इस ज्ञान से जुड़ने के बाद 5 महीने के भीतर ही मेरी दृष्टि-वृत्ति 70 प्रतिशत बदल गई है। मेरी कृति में कुछ गलत नहीं था, लेकिन मेरी दृष्टि-वृत्ति में बहुत परिवर्तन आया है। अब मुझे बहुत ही शांति की अनुभूति होती है। दूसरी बात, मैं सोचता था कि ये सन्यासी, महात्माएं कैसे योग लगा लेते हैं, कैसे समाधिस्थ हो जाते हैं और जुड़ जाते हैं प्रभु से, लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि यहाँ अपने परमपिता शिव परमात्मा से मिलने के बाद, उनकी पहचान पाने के बाद उन्हें याद करना, उनसे जुड़ना कितना सहज हो जाता है।

मेरा अभी तक का एक अच्छा अनुभव यह भी है कि जब तक मैं आध्यात्मिक पत्रिका तथा परमात्मा की मुरली सुनकर पुरुषार्थ का चार्ट लिख न लूँ, मुझे चैन नहीं आता। मैं परमात्मा को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे 5 महीने में ही अपना बना लिया। मैंने निश्चय कर लिया है कि जो मैंने पाया है वो अपनी युगल को भी दिलाऊंगा, अपने परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज में भी इस ज्ञान और परमात्म संदेश का प्रसार करने का पूरा प्रयत्न करूंगा।

प्रश्न: परमात्मा की याद से आपको कैसी महसूसता होती है?

उत्तर: मुझे बहुत शांति की अनुभूति होती है। परमात्मा की याद से मैं स्वयं हर रूप से शारीरिक, मानसिक व अन्य रूप से स्वस्थ होता हुआ महसूस करता हूँ, मैं जान गया हूँ कि यही सहज और सच्चा राजयोग है। इन दो चीज़ों की मुझे प्राप्ति हुई है और जो दो बुराई मैं छोड़ना चाहता था, उससे भी मैं दूर होता जा रहा हूँ।

मेरा अभी तक का एक अच्छा अनुभव यह भी है कि जब तक मैं आध्यात्मिक पत्रिका तथा परमात्मा की मुरली सुनकर पुरुषार्थ का चार्ट लिख न लूँ, मुझे चैन नहीं आता। मैं परमात्मा को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे 5 महीने में ही अपना बना लिया। मैंने निश्चय कर लिया है कि जो मैंने पाया है वो अपने परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज में भी इस ज्ञान और परमात्म संदेश का प्रसार करने का पूरा प्रयत्न करूंगा।

फरीदाबाद सेक्टर 19। किसान भवन के उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री माननीय एम. खट्टर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरीश बहन।

सैफयी-उ.प्र.। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष व सांसद मुलायम सिंह यादव के जन्मदिवस पर उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. किरण व ब्र.कु. तेजस्विनी। साथ हैं ग्रामीण आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. टी. प्रभाकरन, मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, सांसद राम गोपाल यादव व अन्य।

सासाराम-बिहार। ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद छेदी पासवान को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. बबिता।

श्यामनगर-पश्चिम बंगाल। 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में दिबेन्दु चौधरी,प्रिन्सीपल डायरेक्टर,ऑर्डिनेंस फैक्ट्री इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग, विकास रंजन भाई, ब्र.कु. रंजीता व अन्य।

ऋषिकेश। 'विश्व शांति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर ईश्वर दास जी महाराज,अध्यक्ष,ईश्वर आश्रम। साथ हैं सुरेन्द्र कथुरिया,निरंकारी मंडल के उत्तराखण्ड प्रभारी व ब्र.कु. आरती।

डुंगरपुर-राज.। मकर संक्रान्ति पर आयोजित कार्यक्रम में दीप पज्वलित करते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष दिनेश श्रीमाल, डाईट डुंगरपुर की प्रचार्या आभा मेहता, भाजपा के पिछड़ा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रकाश पंचाल, शिक्षण संघ के अध्यक्ष ऋषिन चौबीसा, धनेश्वर रोत, शंकर सिंह सोलंकी व अन्य गणमान्य जन।

दिल्ली-ओम विहार(उत्तम नगर)। 'खुशियों भरी ज़िन्दगी' विषयक कार्यक्रम के दौरान तिलोतमा चौधरी,चेयरपर्सन,एम.सी.डी. नज़फगढ़ को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. विमला व ब्र.कु. जानकी।

दिल्ली-सीताराम बाज़ार। जी.बी.पी. हॉस्पिटल योगा सेंटर में मेडिटेशन क्लास के पश्चात् नर्सेज़ के साथ ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. गुंजन।

ध्यान विधि के साइंस को समझो और अपनाओ

गतांक से आगे...

जब आप भोजन करो तो आपकी ऊर्जा इस तरह से आपके पेट में जाये ताकि खाना जो आप खा रहे हो उसको हज़म कर सको। इसलिए पैरों को मोड़ने की सिस्टम थी। गुरुकुल में जब बच्चे पढ़ने जाते थे तो वहाँ भी बच्चों को नीचे बिठाया जाता था। कुर्सी-टेबल नहीं होती थी। लेकिन आजकल हर जगह कुर्सी-टेबल आ गयी है। इसलिए बच्चे भी एक तरफ पढ़ते जाते हैं , तो दूसरी तरफ अर्थिंग हो जाता है। कुछ भी याद नहीं रहता है। बच्चों की एकाग्रता की शक्ति को अगर बढ़ाना है तो उसके लिए उसको नीचे बैठा कर पढ़ाओ। कभी कुर्सी पर, पलंग पर, सोफा पर बैठकर वह पढ़ ही नहीं सकता है, ये साइंस है। इसलिए पैर मोड़ने का सिस्टम हर धर्म में है। हिंदु धर्म में सुखासन, पद्मासन, अर्धपद्मासन के रूप में मोड़ा जाता है। मुस्लिम धर्म में वज्रासन में बैठते हैं। वो ऊर्जा परमात्मा के ध्यान के लिए ज़रूरी है। उसको मोड़ दो व रोक लो। क्रिश्चन धर्म में नीलडाऊन करते हैं, वहाँ भी पैरों को मोड़ लेते हैं। पैर मोड़ने का सिस्टम हर धर्म में है। ये द्वार, सबसे पहले इसको बंद करो, ताकि ऊर्जा बाहर निकलना बंद हो जाये।

दूसरा द्वार है ये हाथ, यहाँ से भी बहुत ऊर्जा निकलती है। इसलिए लोग जब महात्माओं के पास जाते हैं तो आशीर्वाद चाहते हैं। हाथ रखें हमारे सिर पर। सोचते हैं कि हाथ से जो ऊर्जा निकलती है उससे आत्मा जल्दी चार्ज हो जायेगी। ऐसे कोई आत्मा चार्ज नहीं होती है। दूसरे की शक्ति पर कितना निर्भर रहेंगे? क्यों नहीं हम वो विधि सीख लें जिससे हम अपने आपको चार्ज करें। पड़ोसी के घर से लाईट का कनेक्शन कितना दिन मिलेगा? दो दिन, चार दिन, उसके बाद तो वो पड़ोसी भी कहेगा कि भाई तुम अपना मीटर क्यों नहीं लगा लेते हो। दूसरे की एनर्जी पर कितना दिन चलोगे। ऐसे लोगों से आशीर्वाद प्राप्त कर-करके कहाँ तक जीवन को चलाते रहेंगे? क्यों नहीं हम वो विधि सीखें जो अपने अंदर उस शक्ति को, उस ऊर्जा को जेनरेट कर सकें। इसलिए भारतीय संस्कृति में हाथ जोड़ने की प्रथा है। `क्लोज़ द सर्किट' ध्यान के लिए, इसलिए भगवान के सामने जाते हैं तो हाथ जोड़ते हैं। पूजा में बैठते हैं तो पैरों को मोड़ दिया और हाथों को जोड़ लिया यानि दो द्वार को बंद कर दिया। तो वो ऊर्जा फिर मस्तिष्क की ओर जाती है जो भगवान में ध्यान को एकाग्र करने में हमारी मदद करती है। महान आत्मायें जब तपस्या में बैठते थे, हाथ को जोड़ लेते थे। ताकि वो ऊर्जा लगातार मिलती रहे। महान आत्माओं को देखो, जब महावीर स्वामी ध्यान में बैठे तो कैसे बैठे हैं? महात्मा बुद्ध जब ध्यान में बैठे तो कैसे बैठे हैं? ये सही आसन है। जितने भी महान पुरुष हुये, जितने भी महान आत्मायें संसार में हुई, उनकी ध्यान की विधि को आप ध्यान से देखो। उसके पीछे जो साइंस है, कई बार कई लोग उसको स्पष्ट नहीं कर पाये। क्योंकि मनुष्य की बुद्धि शायद इतनी विकसित नहीं थी। लेकिन आज के युग में हरेक की बुद्धि इतनी विकसित है तो हम क्यों ये करें। क्योंकि हरेक व्यक्ति ये सवाल पहले पूछेगा कि क्यों करना चाहिए? तो उसको तर्क संगत उत्तर चाहिए। आज के बच्चे को आप कहो बैठो, भगवान के सामने हाथ जोड़ो तो कहेगा क्यों जोडूं। आप अगर उसको स्पष्ट नहीं करेंगे तो वो जोड़ेगा ही नहीं। फिर हम कहेंगे तूफानी हो गया है पहले छोटा था तो जोड़ता था मान लेता था। लेकिन अभी हाथ ही नहीं जोड़ता है। उसको उसमें भी शर्म आती है। लेकिन वो तर्कसंगत उत्तर चाहता है। उसको इसकी स्पष्ट व्याख्या चाहिए कि इसको करने से हमें क्या मिलेगा। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

मेघालय-शिलाँग। मेघालय के राज्यपाल वी.शनमुगानाथन को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू में आयोजित कार्यक्रम के लिए आमंत्रित करते हुए ब्र.कु. नीलम।

वाल्मिकी नगर-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. अबिता। साथ हैं ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. संजू, कस्टम कमिश्नर रमाकान्त तिवारी, सहायक कमिश्नर ए.के. पाण्डेय, सहायक कमिश्नर अशोक कुमार व ए.एस.आई. ब्र.कु. सतीश।

सोजत सिटी-राज.। विधायक संजना अगारी के जन्मदिवस के अवसर पर उन्हें बधाई एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बहन।

कोटा-राज.। डिप्युटी कमिश्नर शिव कुमार,रामगंग मंडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला।

समराला-पंजाब। संत सरबजीत सिंह भल्ला,डेरा मुखी श्रीचंद,फरोर एवं अन्य संत जनों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम।

दिल्ली-जनकपुरी। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शरीक होने के पश्चात् चित्र में स्वामी प्रज्ञानंद जी के साथ ब्र.कु. विजया व अन्य।

प्रज्ञा से प्रखर... - पेज 2 का शेष

में दादी जानकी जी ने उस ओर कदम बढ़ाया जहां बीजारोपण करना बहुत कठिन कार्य था। लेकिन दादी जी के सतत् प्रयासों से आज संस्था का विस्तार विदेश तक जा पहुंचा है।

ऐसी दादी को यदि हम विश्व की तीव्रतम व सभी के बुद्धि को भेदने वाला ब्रह्मास्त्र कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज उनका एक-एक शब्द एक अस्त्र की तरह ही लगता है जो सारी बुराइयों को एक सेकण्ड में नष्ट कर सकता है।

आनंद का दूसरा नाम दादी जानकी

कहा जाता है कि सूक्ष्म शरीर में सात चक्र विद्यमान हैं, इन्हीं चक्रों के द्वारा सूक्ष्म शरीर को ऊर्जा मिलती है और शरीर स्वस्थ रहता है। कहते हैं चक्रों में सर्वश्रेष्ठ चक्र सहस्रार है जिसके खुलने के बाद व्यक्ति आनंदित रहता है, उसे और कुछ भी नहीं भाता परमात्मा के सिवाए। वो हमेशा उसी आनन्द में खोया रहता है। हमारी दादी जानकी जी का वही आनंदमयी चक्र पूर्णतया खुल चुका है, उनके मुख से एक ही बात निकलती है ``कितना मीठा कितना प्यारा, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा'' बस और कुछ नहीं। हमेशा आनंद रस से सराबोर हमारी राजयोगिनी दादी जानकी जी सभी को उसी रस से सराबोर करने की कोशिश करती हैं। उनकी बुद्धि इतनी स्थिर हो चुकी है कि और कहीं बाह्य आकर्षणों में बुद्धि जाती नहीं, स्थिर चित्त दादी जी को विश्व की प्रथम स्थिर चित्त महिला के ख़िताब से भी नवाज़ा जा चुका है। मनोवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने भी दादी की शक्ति के आगे अपने आपको नतमस्तक किया।

फरीदाबाद-हरियाणा। विधायक नगेन्द्र बढ़ाना को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेट कर मीडिया की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. शंभुनाथ, ब्र.कु. कौशल्या व अन्य।

पठानकोट-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' चण्डीगढ़ से पठानकोट समापन समारोह का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अश्वनी शर्मा,विधायक, विजय भाई, ब्र.कु. सत्या व अन्य।

ग़ाज़ियाबाद-कवि नगर। नगर निगम कार्यकारिणी के पूर्व उपाध्यक्ष राजेन्द्र त्यागी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राजेश बहन। साथ हैं पूर्व विधायक नरेन्द्र सिशोदिया, ब्र.कु. सुतीश बहन, ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. वनीत।

दसुआ-हरियाणा। नये सेवाकेन्द्र के नींव का पत्थर रखते हुए ब्र.कु. ज्ञानी, ब्र.कु. सुमन, रिटायर्ड चीफ इंजीनियर अमरजीत सिंह नांगलू एवं अन्य भाई बहनें।

कथा सरिता

कलियुगी प्रेम

अर्जुन ने एक रात को स्वप्न में देखा कि एक गाय अपने नवजात बछड़े को प्रेम से चाट रही है। चाटते-चाटते वह गाय उस बछड़े की कोमल खाल को छील देती है। उसके शरीर से रक्त निकलने लगता है और वह बेहोश होकर नीचे गिर जाता है।

अर्जुन प्रातः यह स्वप्न भगवान श्री कृष्ण को बताते हैं। भगवान मुस्करा कर कहते हैं कि यह स्वप्न कलियुग का लक्षण है। कलियुग में माता-पिता अपनी संतान को इतना प्रेम करेंगे, उन्हें सुविधाओं का इतना व्यसनी बना देंगे कि वे उनमें डूबकर अपनी ही हानि कर बैठेंगे, सुविधायें और कुमार्गगामी बनकर विभिन्न अज्ञानताओं में फंसकर अपने होश गँवा देंगे।

आजकल हो भी यही रहा है। माता-पिता बच्चों को मोबाइल, बाइक-कार, कपड़ें, फैशन की सामग्री और पैसे उपलब्ध करा देते हैं। बच्चों का चिंतन इतना विषाक्त हो जाता है कि वो माता-पिता से झूठ बोलना, छिपाना, चोरी करना, अपमान करना सीख जाते हैं।

अटूट निश्चय

एक अत्यंत गरीब महिला जो ईश्वरीय शक्ति पर बेइंतिहा विश्वास करती थी, एक बार अत्यंत ही विकट स्थिति में आ गई। कई दिनों से खाने के लिए पूरे परिवार को नहीं मिला। एक दिन उसने रेडियो के माध्यम से ईश्वर को अपना संदेश भेजा कि वह उसकी मदद करे। यह प्रसारण एक नास्तिक, घमण्डी और अहंकारी उद्योगपति ने सुना और उसने सोचा कि क्यों न इस महिला के साथ कुछ ऐसा मज़ाक किया जाये कि उसकी ईश्वर के प्रति आस्था डिग जाये।

उसने अपने सेक्रेट्री को कहा कि वह ढेर सारा खाना और महीने भर का राशन उसके घर पर देकर जाये ओर जब वह महिला पूछे कि किसने भेजा है तो कह देना कि ``शैतान'' ने भेजा है। जैसे ही महिला के पास सामान पहुँचा तो उसके परिवार ने तृप्त होकर भोजन किया। फिर वह सारा राशन अलमारी में रखने लगी।

जब महिला ने पूछा नहीं कि यह सब किसने भेजा है तो सेक्रेट्री से रहा नहीं गया और पूछा, आपको क्या जिज्ञासा नहीं होती कि यह सब किसने भेजा है।

उस महिला ने बेहतरीन जवाब दिया, मैं इतना क्यों सोचूं या पूछूं, मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है, मेरे भगवान जब आदेश देते हैं तो शैतानों को भी उस आदेश का पालन करना पड़ता है!

देने की भावना

एक संत ने एक द्वार पर दस्तक दी और आवाज़ लगाई ``भिक्षांदेहि''।

– एक छोटी बच्ची बाहर आई और बोली, ``बाबा, हम गरीब हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है।''

संत बोले, ``बेटी, मना मत कर, अपने आंगन की धूल ही दे दे।'' लड़की ने एक मुट्ठी धूल उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। शिष्य ने पूछा, ``गुरुजी, धूल भी कोई भिक्षा है? आपने धूल देने को क्यों कहा?''

संत बोले, ``बेटे, अगर वह आज ना कह देती तो फिर कभी नहीं दे पाती। आज धूल दी तो क्या हुआ, देने का संस्कार तो पड़ गया। आज धूल दी है, उसमें देने की भावना तो जागी, कल समर्थवान होगी तो फल-फूल भी देगी।''

जितनी छोटी कथा है निहितार्थ उतना ही विशाल। साथ में आग्रह भी...दान करते समय दान हमेशा अपने परिवार के छोटे बच्चों के हाथों से दिलवायें...जिससे उनमें देने की भावना बचपन से बने।

समान बल का प्रयोग

गंगा के तट पर एक संत अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे, तभी एक शिष्य ने पूछा, ``गुरुजी, यदि हम कुछ नया, कुछ अच्छा करना चाहते हैं, लेकिन समाज उसका विरोध करता है तो हमें क्या करना चाहिए?

गुरुजी ने कुछ सोचा और बोले, ``इस प्रश्न का उत्तर मैं कल दूंगा''

अगले दिन जब सभी शिष्य नदी के तट पर एकत्रित हुए तो गुरुजी बोले, ``आज हम एक प्रयोग करेंगे... इन तीन मछली पकड़ने वाली डंडियों को देखो, ये एक ही लकड़ी से बनी हैं और बिल्कुल एक समान हैं।''

उसके बाद गुरुजी ने उस शिष्य को आगे बुलाया जिसने कल प्रश्न किया था।

``पुत्र, ये लो इस डंडी से मछली पकड़ो।'', गुरुजी ने निर्देश दिया।

शिष्य ने डंडी से बंधे कांटे में आंटा लगाया और पानी में डाल दिया। फौरन ही एक बड़ी मछली कांटे में आ फंसी।

``जल्दी पूरी ताकत से बाहर की ओर खींचो'' गुरुजी बोले।

शिष्य ने ऐसा ही किया, उधर मछली ने भी पूरी ताकत से भागने की कोशिश की। फलतः डंडी टूट गयी।

``कोई बात नहीं; ये दूसरी डंडी लो और पुनः प्रयास करो।'' गुरुजी बोले।

शिष्य ने फिर से मछली पकड़ने के लिए कांटा पानी में डाला।

इस बार जैसे ही मछली फंसी, गुरुजी बोले, ``आराम से...एकदम हल्के हाथ से डंडी को खींचो।''

शिष्य ने ऐसा ही किया, पर मछली ने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि डंडी हाथ से छूट गयी।

गुरुजी ने कहा, ``ओह्हो, लगता है मछली बच निकली, चलो इस आखिरी डंडी से एक बार फिर से प्रयत्न करो।''

शिष्य ने फिर वही किया।

पर इस बार जैसे ही मछली फंसी गुरुजी बोले, ``सावधान, इस बार न अधिक ज़ोर लगाओ न कम। बस जितनी शक्ति से मछली खुद को अंदर की ओर खींचे उतनी ही शक्ति से तुम डंडी को बाहर की ओर खींचो। कुछ ही देर में मछली थक जायेगी और तब तुम आसानी से उसे बाहर निकाल सकते हो।''

शिष्य ने ऐसा ही किया और इस बार मछली पकड़ में आ गयी।

``क्या समझे आप लोग?'' गुरुजी ने बोलना शुरु किया... ये मछलियाँ उस समाज के समान हैं जो आपके कुछ करने पर आपका विरोध करता है।

यदि आप इनके खिलाफ अधिक शक्ति का प्रयोग करेंगे तो आप टूट जायेंगे।

यदि आप कम शक्ति का प्रयोग करेंगे तो भी वे आपको या आपकी योजनाओं को नष्ट कर देंगे...लेकिन यदि आप उतने ही बल का प्रयोग करेंगे जितने बल से वे आपका विरोध करते हैं तो धीरे-धीरे वे थक जायेंगे... हार मान लेंगे और तब आप जीत जायेंगे।

इसलिए कुछ उचित करने में जब ये समाज आपका विरोध करे तो समान बल प्रयोग का सिद्धान्त अपनाइये और अपने लक्ष्य को प्राप्त कीजिये।

धनगढ़ी-पश्चिम नेपाल। गोदावरी धाम सहस्र दिव्य दर्शन कुम्भ मेला के उद्घाटन अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति विद्यादेवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा।

सेन फ्रान्सिसको। नवनिर्वाचित मेयर एडविन ली के इनॉगरल ईव इंटरफेथ प्रेयर सर्विस के कार्यक्रम में उनसे मुलाकात कर बधाई देते हुए ब्र.कु. चंद्रू।

हरदुआगंज-उ.प्र.। 'किसान विकास अभियान' के अंतर्गत गंगा पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्राचार्य देवराज शर्मा को ओमशान्ति मीडिया व ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशि व ब्र.कु. गीता।

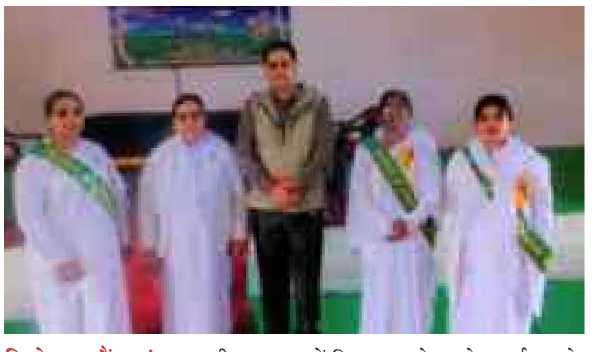

फिरोजपुर कैंट-पंजाब। बी.एस.एफ. में किसान सम्मेलन के कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में डी.आई.जी. सुरिन्द्र कुमार, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

बरनाला-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण रैली' के दौरान रेड क्रॉस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए सीनियर डॉ. गुरजन्त सिंह,डी.टी.ओ.,एग्रीकल्चरल डिपार्टमेंट। साथ हैं ब्र.कु. बहनें व अन्य।

फतेहगढ़ साहिब-पंजाब। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. परिधि सिंह,स्वाइल टेस्टिंग ऑफिसर, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. सविता व अन्य।

दूसरों को समझने के लिए स्वयं से प्रेम करना ज़रूरी

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

खुद को प्रेम करना यहां बुरा समझा जाता है और लोग इसे आत्म-मुग्धता की संज्ञा देते हैं। याद रखने वाली बात यह है कि हम दूसरे को, सृष्टि को सिर्फ अपनी रोशनी में ही देखने में समर्थ हैं। अपने प्रति प्रेम और दूसरे के प्रति प्रेम विपरीत भावनाएं नहीं हैं। प्रेम अविभाज्य है, अर्थात् अलग नहीं है। प्रेम या तो है या तो नहीं है। ये नहीं कि ज़रा सा है, ज़रा सा नहीं है। कि यह यहाँ है यहाँ नहीं है।

अगर आप स्वयं से प्रेम नहीं करते तो आप दूसरे से भी नहीं कर सकते। भीड़ में कभी आप देखते हैं कि कोई किसी को प्रेम करता है? क्योंकि उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। भीड़ आपको सहारा तो देती है लेकिन आपकी स्वयं की पहचान छीन लेती है। आप हमेशा देखेंगे कि जब कोई दूसरे को मारता है तो वो व्यक्ति अपने से नफरत करता है। क्योंकि स्वयं से प्रेम करने वाला इंसान दूसरे को मार नहीं सकता। हमारे समाज में आत्मविश्वास और आत्मप्रेम नहीं सिखाया जाता। खुद को प्रेम करना यहां बुरा समझा जाता है और लोग इसे आत्म-मुग्धता की संज्ञा देते हैं। याद रखने वाली बात यह है कि हम दूसरे को, सृष्टि को सिर्फ अपनी रोशनी में ही देखने में समर्थ हैं। अपने प्रति प्रेम और दूसरे के प्रति प्रेम विपरीत भावनाएं नहीं हैं। प्रेम अविभाज्य है, अर्थात् अलग नहीं है। प्रेम या तो है या तो नहीं है। ये नहीं कि ज़रा सा है, ज़रा सा नहीं है। कि यह यहाँ है यहाँ नहीं है। अगर हम आकर्षण के भी सिद्धान्त को लें तो कह सकते हैं कि जहां हम खुशी और प्रसन्नता चाहेंगे तो निश्चित रूप से वहां प्रेम होगा और जब प्रेम होगा तो वह दूसरों के पास स्वतः पहुंचेगा।

किसी भी व्यक्ति को भी प्रेम करना अर्थात् समस्त सृष्टि को प्रेम करना। यहाँ 'करना' शब्द किसी कार्य का सूचक नहीं है, बल्कि 'होना' शब्द होना चाहिए। कहने का भाव यह है कि करते निःसंदेह आप ही हो, परंतु यह होता स्वयं है। इसका विस्तार यदि हम देखें तो कह सकते हैं कि आत्मा अपने आप में सम्पूर्ण प्रेम स्वरूप ही है। उसे प्रेम करने के लिए किसी वस्तु या किसी व्यक्ति या किसी ऑब्जेक्ट की ज़रूरत नहीं है। यहाँ यह बात समझ लेना ज़रूरी है कि आत्मप्रेम और स्वार्थ दो अलग-अलग चीज़े हैं। स्वार्थ शारीरिक स्तर तक ही सीमित है, इसलिए स्वार्थी व्यक्ति - शेष पेज 11 पर

7 कदम राजयोग की ओर.....

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः– मैं एक डायरेक्ट प्रश्न आपसे पूछता हूँ - क्या आपने भगवान को देखा है?

उत्तरः– हम भी डायरेक्ट उत्तर दे रहे हैं..हाँ...एक बार नहीं बार-बार और उनसे ऐसा दिव्य नेत्र भी प्राप्त कर लिया है कि जब चाहे उन्हें देख लें और केवल देखा ही नहीं बल्कि उनसे नाता भी जुड़ गया। हम अति समीप हो गये, वो हमारा हो गया। वो हमारा परम मित्र बन गया। यदि आप चाहें तो हम आपका भी उनसे दिव्य मिलन करा सकते हैं।

प्रश्नः– आप लोग सन्त-महात्माओं का सम्मेलन रखते हो। परन्तु ये तो कभी आपस में मिलते नहीं। इन सबकी विचारधाराएं अलग-अलग हैं, इनसे आप क्या अपेक्षाएं रख सकते हैं? वे संसार को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं।

उत्तरः– नहीं बन्धु...जो सन्त हैं वे अवश्य ही सांसारिक लोगों से श्रेष्ठ हैं। यह हो सकता है कि वे आपकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरते हों परन्तु हैं तो वे महान ही। जिन्होंने थोड़ी भी पवित्रता अपनाई हो वे महान हैं। फिर उनका त्याग भी तो है। विचारों में मतभेद हो सकता है, परन्तु हमें उन्हें ईश्वरीय संदेश भी देना होता है। हमारा लक्ष्य ये भी है कि जिस लक्ष्य हेतु उन्होंने त्याग किया है उस परमात्म-मिलन की विधि वे परमात्म-ज्ञान द्वारा प्राप्त कर सकें। साथ-साथ इस महान ईश्वरीय कार्य में वे हमारे सहयोगी भी हैं व बन भी जाते हैं। हमें किसी की भी कमी नहीं देखना है, हमें तो उन्हें और ही समीप लाना है।

प्रश्नः– आपके पास इतने सन्त आये, उनमें से कितनों ने भगवान को पहचाना...? मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कुछ हुआ है क्योंकि इन विद्वानों में अहम् बहुत होता है।

उत्तरः– आबू पावन तीर्थ एक ऐसी दिव्य भूमि है जहां आकर सभी का अहं समाप्त हो जाता है। हमें एक भी संत से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उनमें अहं है। यहां हमने सभी को दिव्य व सौम्य स्वरूप में ही देखा। यहां उनके चेहरों पर शान्ति थी, प्रेम था, अपनत्व का भाव था व आनंद था। उनके कानों में ये महावाक्य पड़े कि ये ईश्वरीय कार्य मनुष्यों द्वारा संचालित नहीं है। उन्होंने सुना कि ब्रह्मा बाबा के तन में स्वयं निराकार, ज्ञान सागर, महाज्योति परम-सत्ता, परम आत्मा ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वही ज्ञान यहां दिया जा रहा है। यह जानकर कि अब भी उनका अवतरण होता है, उनमें से कइयों ने उनका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने की सच्चे दिल से इच्छा व्यक्त की।

प्रश्नः– मुझे आपका ज्ञान व आपका कार्य बहुत अच्छा लगता है। परन्तु अब तक भी ये विश्वास नहीं होता कि आप सभी पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। क्योंकि पवित्रता की धारणा तो अति कठिन है। बड़े-बड़े महात्मा भी इसमें फेल हो जाते हैं।

उत्तरः– आपने सत्य कहा कि पवित्रता की धारणा कठिन है। हम भी यही समझते थे। परन्तु जब मनुष्य को अपने स्वरूप का सत्य ज्ञान हो जाता है, जब उसे अपने आदि देव-स्वरूप की अनुभूति हो जाती है तथा जब मनुष्य का बुद्धियोग पतित-पावन, पवित्रता के सागर परमात्मा से जुड़ जाता है तब पवित्रता जीवन के लिए वरदान बन जाती है। यही हुआ है ब्रह्माकुमार-कुमारियों के साथ। यहां का आधार ही पवित्रता है। बिना इसके कोई ब्रह्मा-वत्स भी नहीं कहला सकता, बिना पवित्रता के कोई योगी भी नहीं बन सकता। प्यारे बन्धु, आपको यहां की पवित्रता पर तब विश्वास हो जाएगा जब आप स्वयं इस मार्ग पर अग्रसर होंगे। इस पवित्रता के पीछे परमात्म-शक्ति कार्य कर रही है। क्योंकि अब उसे इस सारे संसार को पवित्र बनाना है।

प्रश्नः– प्रत्यक्षता का क्या अर्थ है? बाबा हमेशा प्रत्यक्षता शब्द का उपयोग करते हैं, प्रत्यक्षता कैसे होगी, यह भी बताएं।

उत्तरः– प्रत्यक्षता का अर्थ है - आये हुए शिव बाबा को सभी जान लेंगे और स्वीकार कर लेंगे कि वह मेरा है। परन्तु शिव बाबा की यह प्रत्यक्षता एकदम अंत में होगी। उससे पूर्व प्रत्यक्ष होंगे अष्ट रत्न, विजयी रत्न अर्थात इष्ट देव-देवियां। साथ ही साथ सम्पूर्ण सत्य परमात्म-ज्ञान भी प्रत्यक्ष होगा अर्थात् सभी उसे स्वीकार कर लेंगे। इसे ही बाबा कहते हैं कि विश्व-नाटक के सभी हीरो एक्टर स्टेज पर आ जाएंगे अर्थात् सभी जान लेंगे कि कौन क्या है। जहां-तहां बाप समान स्थिति में स्थित हुई आत्माओं के साक्षात्कार होंगे। विजयी रत्नों में पहली पच्चीस आत्माएं विशेष रूप से प्रख्यात होंगी। कहीं उनसे दुर्गा के साक्षात्कार होंगे तो कहीं अम्बा, काली, सरस्वती, गायत्री आदि देवियों के। किसी के मस्तक में चमकती हुई ज्योति दिखाई देगी तो किसी के साथ महाज्योति। तब ज्ञान-योग पांच-दस मिनट में ही सिखा दिया जाएगा। इस तरह होगी जयजयकार। आप यदि प्रत्यक्षता में मुख्य पार्ट बजाना चाहते हैं तो स्वमान में स्थित होकर महान योगी बनें।

प्रश्नः– मुझे मनन करना बिल्कुल नहीं आता। परन्तु बाबा मननशक्ति बढ़ाने को कहते हैं। मैं क्या करूं जो इस सब्जेक्ट में भी आगे बढ़ सकूं?

उत्तरः– ज्ञान मनन अति आवश्यक है। क्योंकि मनन से ही ज्ञान बल के रूप में काम करता है। ज्ञान जब तक बल न बने तब तक जीवन निर्विघ्न नहीं बन सकता और न ही स्थिति योग-युक्त बन सकती। ज्ञान मनन के लिए ज्ञान-दान करो। ज्ञान देना है तो मनन अवश्य करेंगे। मनन शक्ति सबके पास है परन्तु जो व्यर्थ का मनन ज़्यादा करते हैं, वे ज्ञान-मनन नहीं कर पाते। देख लो यदि कोई आपको बुरे शब्द बोल दे तो आप उसका कितना मनन करते हैं। मनन शक्ति बढ़ाने के लिए अन्तर्मुखी होना आवश्यक है। बाह्यमुखी कभी मनन नहीं कर सकते। दूसरी बात -कुछ ज्ञान की प्वाइंट्स को स्मृति में रखो तो मनन होता रहेगा। एक टॉपिक लेकर उस पर लिखो। उदाहरण -'आत्मा के बारे में हम क्या जानते हैं, परमात्मा के बारे में हम क्या जानते हैं,' आदि...।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

ओमशान्ति मीडिया-शांतिवन। ओमशान्ति मीडिया कार्यालय में दादियों के आगमन पर उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व शिवरात्रि पर निकाले गए विशेषांक **'शिव अवतरण'** के बारे में जानकारी देते हुए ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं ब्र.कु. करुणा,मल्टी मीडिया चीफ, ओमशान्ति मीडिया स्टाफ ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. राकेश, ब्र.कु. ईश्वर, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. गोविंद, ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. मोनिका एवं ब्र.कु. केतन।

लाभप्रद है... - पेज 4 का शेष

संबंधी रोगों में राहत मिलती है। मधुमेह में यह विशेष लाभप्रद होता है, मधुमेह के रोगी को रोज़ाना तीन रत्ती जामुन का चूर्ण दिया जाना लाभप्रद होता है। यह खाँसी में लाभप्रद, मसूड़ों को मजबूत करता है।

आड़ू: वास्तव में यह फल चीन का है। यूरोप में भी यह काफी पाया जाता है। भारत में हिमाचल, मणिपुर और उत्तरी भागों में काफी पैदा होता है। यह पौष्टिक, मधुर, हृदय रोगों में लाभप्रद, प्रमेह, बवासीर के रोगी के लिए उपयोगी होता है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

अंगूर: यह फल कश्मीर, कर्नाटक आदि स्थानों में काफी होता है। काले अंगूर और हरे अंगूर का शर्बत शरीर के लिए पुष्टिकारक होता है। ज्वर, हल्की हरारत एवं पेट के रोगों में तो यह बहुत हितकारी होता है। नेत्रों के लिए अंगूर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है।

संतरा, मौसमी, मालटा एवं कीनू: ये फल भारत के लगभग सभी भागों में प्राप्त होते हैं। नागपुर का संतरा, मुम्बई की मौसमी प्रसिद्ध है। इनके फलों का रस पेट के रोग, गले के रोग, श्वास के रोग, दस्त में लाभदायक होता है। बलवर्द्धक, ज्वरनाशक, प्यास बुझाने वाले, रक्त पित्त नाशक। विटामिन सी और ए होने से नेत्र रोग में उपयोगी होता है। इसके रस में हींग मिलाकर देने से कृमिनाश होता है।

अलूचा: गढ़वाल, कश्मीर, पश्चिम हिमाचल के क्षेत्रों में अधिक होता है। यह प्यास को हरने वाला, खाँसी में लाभप्रद होता है। गले के रोगों में उपयोगी और उसके पत्ति कृमिनाशक होते हैं।

चीकू: यह पित्तनाशक, ज्वरनाशक एवं लौहपूर्ण होता है।

पपीता: यह पौष्टिक, रूचिकर, शीतल होता है। मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। कच्चे पपीते की सब्जी पेट के रोगों में हितकारी होती है। इसके बीज तो अनेक औषधियों में उपयोगी होते हैं।

खरबूजा: यह अमृत के समान गुणकारी होती है। शीतल, पसीना लाने वाला होता है। गुर्दे के रोग में लाभकारी, पीलिया में फायदेमंद, पथरी को तोड़ता है। पेट की गर्मी को कम करता है। मुख पर लेप करने से झाइयां मिटती है। इसके बीज पेट साफ करते हैं, नेत्रों के लिए शक्तिदायक, पेशाब की जलन और जिगर की सूजन भी मिटाते हैं।

तरबूज: यह पीलिया में लाभप्रद, वात कफ नाशक होता है। इसके बीज मधुर और नेत्रों के लिए उपयोगी, बलकारक, धातुवर्द्धक होते हैं, खून की उल्टी में भी इसके बीजों से लाभ होता है।

सिंघाड़ा: यह दाह दूर करने वाला होता है, इसके सेवन से प्यास कम लगती है। यह त्रिदोषनाशक, श्रम हारक, सूजन और संताप दूर करने वाला होता है। सिंघाड़ा ज्वरनाशक, मलेरिया में सहायक एवं रक्त प्रदर में उपयोगी होता है।

नारियल: भारी कब्ज दूर करने वाला, बलकारक, ज्वर में लाभप्रद, प्यास बुझाता है। रूधिर दोष और क्षय रोगी के लिए भी लाभप्रद होता है। इसका तेल केशों के लिए उपयोगी होता है और जले स्थानों पर लगाने से लाभ मिलता है।

दूसरों को समझने... - पेज 10 का शेष

कभी प्रेम नहीं कर सकता, वह हमेशा असंतुष्ट रहता है, क्योंकि उसे सबसे लेने की मंसा होती है और मांगने वाला या लेने वाला कभी राजा नहीं बन सकता, वह हमेशा भिखारी ही रहता है। आत्मप्रेम में व्यक्ति अपने निजी स्वरूप में वही है, सिर्फ वह स्वयं को स्वयं की नज़र से देख नहीं पा रहा है। वह हमेशा दूसरों की नज़रों से अपने आप को देखने की कोशिश करता है, लेकिन उसे पता नहीं कि दूसरे तो पहले से ही खाली हैं। क्या जो दूसरे कहेंगे वो सही हो सकता है ?

इसी आधार पर ही ईश्वरीय प्रेम भी

परमात्मा के प्रति प्रेम, हमारे दुनिया से विलगाव की भावना और अपने अकेलेपन से मुक्ति का नाम है। आपको पता होना चाहिए कि लोग हमेशा मृत्यु क्यों चुनना चाहते हैं। क्योंकि वहां कोई संघर्ष नहीं है, वहां कोई ख्वाइश नहीं है, सिर्फ शांति है। वहां हमें न श्वास की फिकर है न अस्तित्व की। वैसे भी देखा जाए तो सभी धर्मों में ईश्वर को विलक्षण गुणों के आधार से उच्चतम माना गया है। उन्हीं गुणों को मनुष्य स्वप्नों में ढूंढ़ता है तथा अपने किसी स्वप्न को पूरा करने हेतु वो इन्हीं ईश्वर के विलक्षण गुणों को मनुष्यों के साथ जोड़कर देखता है। और आज हर मनुष्य उन गुणों की पूजा कर लेता है।

आज हम चाहे महान आत्मा, चाहे दिव्य आत्मा, चाहे पुण्य आत्मा, चाहे धर्म-आत्मा के साथ क्या करते हैं, उन्हें एक जगह बिठा देते हैं और वापस अपने संसार में लिप्त हो जाते हैं। शायद ईश्वर को मनुष्य की आकृति देने के पीछे मूल वजह यही होगी! ध्यान देने वाली बात यह है कि और तरह के प्रेम में हमें अपने आपको दूसरे के प्रेम पर खड़ा उतरना होता है, लेकिन ईश्वरीय प्रेम बिल्कुल अलग है, यह वो प्रेम है जिसमें जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है। ईश्वरीय प्रेम की भी तो कुछ अवधारणाएं हैं ना। जैसे यदि ईश्वर को माता मानें कि माँ अपने बच्चे को अपनाकर उसे क्षमा करती है और यदि पिता माने तो योग्यता और प्रतिद्वंदिता के आधार पर निर्णय लेते हैं। एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति का ईश्वर की छवि से कोई लेना-देना नहीं होता है, वो तो सिर्फ उनके लिए प्रेम का एक स्वरूप है। जब हम कहते हैं कि प्रेम ही ईश्वर का स्वरूप है तो वह कोई बाहर की चीज़ तो नहीं होगी ना। मनुष्य, मनुष्य में भेद करने वाला प्रेम कोई प्रेम है! ईश्वर को प्रेम करने का मतलब है समस्त सृष्टि को प्रेम करना।

प्रेम वहीं संभव है जहां व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के केन्द्र में से उस दूसरे की तरफ बढ़ता है और उसे पाता है। प्रेम का अर्थ है खुद को बिना शर्त उस दूसरे को दे देना, यही समर्पण उस दूसरे के भीतर प्रेम पैदा करता है। जो व्यक्ति खुद में आस्था रखता है वह दूसरों के प्रति भी आस्थावान और विश्वासी हो जाता है। अगर हमारी खुद में आस्था नहीं तो हमारे लिए अपनी ही पहचान मुश्किल हो जाती है, तब हमारे लिए हमारी खुद के राय के बजाए दूसरे की राय महत्वपूर्ण हो जाती है। तो बस! प्रेम करिए, करिए, करिए, करिए, और बस करते ही जाइए।

शांतिवन। जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय फारुख अब्दुल्ला को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. राजेश, ब्र.कु. नीरज, ब्र.कु. रेणुका।

सीकर-राज.। विश्व शांति मेला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. स्वाति, ब्र.कु. पुष्पा, पवन मोदी, सुभाष महरिया,पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, ब्र.कु. पूनम, गोवर्धन वर्मा,विधायक, महेश जी व ब्र.कु. अरुण।

सोजत सिटी-राज.। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत निकाली गई रैली में उपस्थित हैं म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन मांगीलाल जी, कॉर्पोरेटर विकास टंक, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. आरती व अन्य।

आगरा (सेक्टर 7) : ग्राम विकास अभियान के अन्तर्गत आयोजित रैली का शुभारम्भ करते हुए शिम्बुजिया कॉलेज के डायरेक्टर जी.एस. राणा, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।

डिहरी-बिहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रखण्ड प्रमुख नीतू सिंह, प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी, महिला समाजसेवी सुनीता सिंह, ब्र.कु. शोभा व अन्य।

बख्तियारपुर-बिहार। बख्तियारपुर चर्च के सेक्रेट्री फादर बर्थलोम्यू व विमला विद्यालय की प्रिन्सीपल मोनिका बहन के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. मृदुल।

कहा तुम जियो हजारों साल... संतों ने दिया शतायु का आशीर्वाद

अन्य धर्मों को भी अपनी आध्यात्मिक शान से दादी ने किया नतमस्तक

धार्मिक, यौगिक भूमिका निभाने वाली संस्था 'ब्रह्माकुमारीज़'

श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धाराम : दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। इस यात्रा के लिए योग माध्यम के द्वारा विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पायी गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, इसे कर दिखाने वाली कोई संस्था है तो वह यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ही है। ये बहुत ही सुंदर अवसर है जब हम दादी जानकी जी का 100वाँ जन्मदिवस मना रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति को शांति चाहिए, उस शांति के लिए दो-तीन चीज़ें प्रतिबंधिक हैं, पहला है अपना अहंकार, दूसरा है व्यामोह और साथ-साथ मैंने इन दोनों को छोड़ा है ऐसा भाव भी मन में नहीं रहना चाहिए, तब जाकर आपको शांति प्राप्त होती है। ऐसी शांति को विश्व में फैलाने के लिए इस संस्था ने बखूबी प्रयत्न किया है। हमें गर्व है कि अपना सौ साल उन्होंने दूसरों को शांति प्रदान करने के लिए व्यतीत किया है। हम अपनी सभी पीठों की ओर से यही शुभकामनाएं देते हैं कि आपकी सम्पूर्ण आयु हो और आपकी आयु लोकहित के लिए समर्पित हो।

दादी जानकी एवं दादी हृदयमोहिनी का सम्मान करते हुए संतजन। साथ हैं राजस्थान पत्रिका के मुख्य संपादक गुलाब कोठारी व अन्य।

दादी जी लिविंग लाइफ यूनिवर्सिटी

हर घर में हों एक दादी जानकी

एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज, प्रेसीडेंट शिवानंद आश्रम, दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद – सेरिनिटी, रेग्युलेरिटी, एब्सेंस ऑफ वैनिटी, सिस्सीयरिटी, सिम्पलीसिटी, वैरेसिटी, इक्वानिमिटी, फिक्सिटी, नॉन इरेटिबिलिटी, एडेप्टीबिलिटी, ह्यूमैनिटी, जेनेरिसिटी की आप हैं लिविंग लाइफ यूनिवर्सिटी। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ये नर्क के द्वार हैं, इनका शास्त्रों में वर्णन भी है। मैं दादी सहित किसी भी ब्र.कु. भाई बहनों के पास गया तो किसी भी भाई बहनों को मैंने जोश में, आक्रोश या ऊँची आवाज़ में बात करते नहीं देखा। मैं तो चाहूंगा कि हर घर में ऐसी दादी जानकी हों, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। प्योरिटी, लव, ह्यूमैनिटी, चैरिटी के साथ हर घर में डिविनिटी हो। मैं चाहता हूँ कि दादी जानकी जी 120वर्ष जीयें और आपको हमारी उम्र भी लग जाये।

स्वार्थ नहीं परमार्थ के लिए इनका जीवन : लोकेश मुनी

बूंदें लाखों बरसती हैं, पर बूंदें तो वही है जो स्वाती नक्षत्र की हों और नक्षत्र वही जो पूजे जाते हैं, जो जीवनमुक्ति का द्वार खोल देते हैं। दादी जानकी ने अपने व्यक्तित्व से अपनी प्रवृत्ति से लाखों-लाखों लोगों के अंदर विश्वास की लौ जलाई है। दुनिया में लोग नाम, मान, शान के लिए आते हैं लेकिन दादी जानकी जी स्वार्थ के लिए नहीं परमार्थ के लिए आई हैं। आज मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस शतायु जन्मदिवस के अवसर पर आने का मौका मिला। आज दुनिया में कन्या भ्रूण हत्या की जा रही है, लेकिन ब्रह्माकुमारी संस्था ने महिलाओं का इतना उत्थान किया जो मैं इस संस्था को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ। मैं तो ये कहूंगा कि **असली भारत रत्न की हकदार तो हमारी दादी जानकी जी** हैं।

ओम शांति से की ओमशान्ति मीडिया की महिमा - दादी

ओमशान्ति मीडिया-शांतिवन। दादी जानकी ने साकार में बाबा के साथ का अपना अनुभव सुनाते हुए बताया कि जब उन्होंने बाबा से पूछा कि लोग हमसे मिलकर नमस्ते करते हैं तो हम क्या बोलें, तो बाबा ने कहा कि तुम उन्हें ओम शांति बोलो। ओम-शान्ति की महिमा बताते हुए दादी ने कहा कि, एक बार ओम शांति कहो तो लाईट हो जाते हैं, दूसरी बार ओम शांति कहो तो माईट आ जाती है और तीसरी बार ओम शांति कहो तो एवरीथिंग राईट हो जाता है। ये बहुत खुशी की बात है कि दुनिया के कोने-कोने में इस ईश्वरीय संदेश को पहुँचाने के लिए यह ओमशान्ति मीडिया तैयार की गई है। ये है हमारे बाबा का यज्ञ, संगम युग, ये समय है हमारा भाग्य बनाने का। मुझे खुशी होती है, यहाँ मेरे साथ भगवान है। बाबा को सिर्फ याद नहीं करो, बाबा के साथ कम्बाइंड हो जाओ, उसे अपना साथी बना लो। इसमें इतना बल आता है, बाबा साथी है मैं बस साक्षी बन जाऊँ। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, ये पूरी जीवन का अनुभव है।

ओमशान्ति मीडिया के सदस्यों ने भी कार्यालय में मनाया दादी का शताब्दी महोत्सव

परमात्मा के कार्य को अखबार वाले ही प्रत्यक्ष करने के निमित्त – दादी हृदयमोहिनी

दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि ये छोटा सा संगमयुग बहुत ऊँचे काम के लिए मिला है। इसलिए हमें हरेक को परमात्मा का संदेश ज़रूर पहुंचाना चाहिए। ये पुरुषार्थ चलता ही रहता है अखबार द्वारा या और भी साधनों द्वारा। हम ये सोचते हैं कि दुनिया वालों को ये पता पड़े कि परमात्मा गुप्त पार्ट बजा रहा है। थोड़ा-थोड़ा तो अभी अखबारों द्वारा भी काम लेते हैं लेकिन दिन प्रतिदिन इन सेवाओं को बढ़ाने का सभी भाई बहन उमंग और उत्साह से अपने अपने क्षेत्र में काम कर रहे हैं। परमात्मा शिव बाबा यही देख करके खुश होता है कि बच्चों को इस बात का उमंग है कि चारो ओर बाप का नाम प्रत्यक्ष हो कि बाबा कौन है और कैसे गुप्त रूप में सेवा कर रहे हैं, उसके लिए अखबारों वाले निमित्त हैं ही। यहाँ का कार्य बहुत अच्छी तरह से चल रहा है और आगे भी चलता रहेगा।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । **विदेश** - 2500 रुपये (वार्षिक) **कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।**

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 5th Feb 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।